दादा भगवान कथित

# व्यसन मुक्ति का मार्ग

दादा भगवान कथित

# व्यसन मुक्ति का मार्ग


मूल गुजराती संकलन : दीपकभाई देसाई

हिन्दी अनुवाद : महात्मागण

**प्रकाशक** : **अजीत सी. पटेल**
**दादा भगवान विज्ञान फाउन्डेशन,**
1, वरूण अपार्टमेन्ट, 37, श्रीमाली सोसायटी,
नवरंगपुरा पुलिस स्टेशन के सामने, नवरंगपुरा,
अहमदाबाद - 380009, Gujarat, India.
**फोन :** +91 79 3500 2100, +91 9328661166/77



**प्रथम संस्करण** : 3000 प्रतियाँ, मई 2025

**भाव मूल्य** : 'परम विनय' और
'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव!

**द्रव्य मूल्य** : 25 रुपए

**मुद्रक** : अंबा मल्टीप्रिन्ट
एच.बी.कापडिया न्यू हाइस्कूल के सामने,
छत्राल-प्रतापपुरा रोड, छत्राल,
ता. कलोल, जि. गांधीनगर-382729, गुजरात
**फोन :** +91 79 3500 2142

**ISBN/eISBN :** 978-93-91375-76-8

**Printed in India**

# त्रिमंत्र

नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो ऊवज्झायाणं

नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच नमुक्कारो

सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं

पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

ॐ नम: शिवाय ॥ ३ ॥

जय सच्चिदानंद

## ‘दादा भगवान’ कौन?

जून 1958 की एक संध्या का करीब छ: बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेलवे स्टेशन, प्लेटफार्म नं. 3 की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर ‘दादा भगवान’ पूर्ण रूप से प्रकट हुए और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। ‘मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?’ इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सम्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजी भाई पटेल, गुजरात के चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष!

‘व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं’, इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसी के पास से पैसा नहीं लिया बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षुजनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे अक्रम मार्ग कहा। अक्रम, अर्थात् बिना क्रम के, और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना। अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट।

वे स्वयं प्रत्येक को ‘दादा भगवान कौन?’ का रहस्य बताते हुए कहते थे कि ‘‘यह जो आपको दिखते हैं वे दादा भगवान नहीं हैं, वे तो ‘ए.एम.पटेल’ हैं। हम ज्ञानी पुरुष हैं और भीतर प्रकट हुए हैं, वे ‘दादा भगवान’ हैं। दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हैं। वे आप में भी हैं, सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और ‘यहाँ’ हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।’’

## आत्मज्ञान प्राप्ति की प्रत्यक्ष लिंक

'मैं तो कुछ लोगों को अपने हाथों सिद्धि प्रदान करने वाला हूँ। बाद में अनुगामी चाहिए या नहीं चाहिए? बाद में लोगों को मार्ग तो चाहिए न?'

**- दादाश्री**

परम पूज्य दादाश्री गाँव-गाँव, देश-विदेश परिभ्रमण करके मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे। आप श्री ने अपने जीवनकाल में ही पूज्य डॉ. नीरू बहन अमीन (नीरू माँ) को आत्मज्ञान प्राप्त करवाने की ज्ञानसिद्धि प्रदान की थी। दादाश्री के देहविलय पश्चात् नीरू माँ उसी प्रकार मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति, निमित्त भाव से करवा रही थीं। पूज्य दीपक भाई देसाई को दादाश्री ने सत्संग करने की सिद्धि प्रदान की थी। नीरू माँ की उपस्थिति में ही उनके आशीर्वाद से पूज्य दीपक भाई देश-विदेश में कई जगहों पर जाकर मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान करवा रहे थे, जो नीरू माँ के देहविलय पश्चात् आज भी जारी है। इस आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद हज़ारों मुमुक्षु संसार में रहते हुए, ज़िम्मेदारियाँ निभाते हुए भी मुक्त रहकर आत्मरमणता का अनुभव करते हैं।

ग्रंथ में मुद्रित वाणी मोक्षार्थी को मार्गदर्शन में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी, लेकिन मोक्षप्राप्ति हेतु आत्मज्ञान प्राप्त करना ज़रूरी है। अक्रम मार्ग के द्वारा आत्मज्ञान की प्राप्ति का मार्ग आज भी खुला है। जैसे प्रज्वलित दीपक ही दूसरा दीपक प्रज्वलित कर सकता है, उसी प्रकार प्रत्यक्ष आत्मज्ञानी से आत्मज्ञान प्राप्त करके ही स्वयं का आत्मा जागृत हो सकता है।

## निवेदन

ज्ञानी पुरुष संपूज्य दादा भगवान के श्रीमुख से अध्यात्म तथा व्यवहारज्ञान से संबंधित जो वाणी निकली, उसको रिकॉर्ड करके, संकलन तथा संपादन करके पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया जाता है। विभिन्न विषयों पर निकली सरस्वती का अद्‌भुत संकलन इस पुस्तक में हुआ है, जो नए पाठकों के लिए वरदान रूप साबित होगा।

प्रस्तुत अनुवाद में यह विशेष ध्यान रखा गया है कि वाचक को दादाजी की ही वाणी सुनी जा रही है, ऐसा अनुभव हो, जिसके कारण शायद कुछ जगहों पर अनुवाद की वाक्य रचना हिन्दी व्याकरण के अनुसार त्रुटिपूर्ण लग सकती है, लेकिन यहाँ पर आशय को समझकर पढ़ा जाए तो अधिक लाभकारी होगा।

प्रस्तुत पुस्तक में कई जगहों पर कोष्ठक में दर्शाए गए शब्द या वाक्य परम पूज्य दादाश्री द्वारा बोले गए वाक्यों को अधिक स्पष्टतापूर्वक समझाने के लिए लिखे गए हैं। जबकि कुछ जगहों पर अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी अर्थ के रूप में रखे गए हैं। दादाश्री के श्रीमुख से निकले कुछ गुजराती शब्द ज्यों के त्यों *इटालिक्स* में रखे गए हैं, क्योंकि उन शब्दों के लिए हिन्दी में ऐसा कोई शब्द नहीं है, जो उसका पूर्ण अर्थ दे सके। हालांकि उन शब्दों के समानार्थी शब्द अर्थ के रूप में, कोष्ठक में और पुस्तक के अंत में भी दिए गए हैं।

ज्ञानी की वाणी को हिन्दी भाषा में यथार्थ रूप से अनुवादित करने का प्रयत्न किया गया है किन्तु दादाश्री के आत्मज्ञान का सही आशय, ज्यों का त्यों तो, आपको गुजराती भाषा में ही अवगत होगा। जिन्हें ज्ञान की गहराई में जाना हो, ज्ञान का सही मर्म समझना हो, वह इस हेतु गुजराती भाषा सीखें, ऐसा हमारा अनुरोध है।

अनुवाद से संबंधित कमियों के लिए आपसे क्षमाप्रार्थी हैं।

# संपादकीय

व्यसन में से मुक्त होना यानी अत्यंत कठीन है! यह मान्यता व्यसन से बंधे सभी लोगों को होगी ही! फिर वे ड्रग्स, अल्कोहॉल जैसे महाज़ोखिमी व्यसन हों या सिगरेट-पान-चाय जैसे अन्य व्यसन। जिन्हें व्यसन छोड़ना ही है, उनके छोड़ने के प्रयत्न कई बार करने के बाद भी प्रयत्नों में जब सफलता नहीं मिलती तब यह मान्यता गाढ़ होती ही रहती है और अंदर अनसुलझे प्रश्न रहा ही करते हैं, कि मुझे तो छोड़ना है तो छूटता क्यों नहीं है? थोड़े समय के लिए छूट जाता है लेकिन वापस चिपक क्यों जाता है?

इस हेतु व्यसन वह वास्तव में क्या है, कैसे घुसता है, इसका आधार क्या है, आधार खत्म करने के लिए कैसे.. वगैरह विस्तृत समझ परम पूज्य दादा भगवान ने यहाँ खुल्ली की है। वे कहते हैं कि ज़हर को वास्तव में ज़हर जानें तो वह छूता ही नहीं! तो व्यसन वह कैसे ज़ोखिमी है, उसकी विस्तार से समझ फिट करवा देते हैं, कि जो सही समझ ही व्यसन के लिए उसका अभिप्राय बदलकर एक दिन उसे उसमें से मुक्त करके रहेगी।

दूसरी ओर व्यसन में सुख ही लगता है ऐसे व्यक्ति को भी प्रश्न रहते हैं कि मुझे इसमें से सुख लगता ही है, तो इसका क्या? व्यसन गलत है ऐसा दृढ़तापूर्वक तय नहीं हो पाता, तो क्या करें? इसके लिए दादाश्री कहते हैं, कि यह आनंद वास्तव में व्यसन नहीं देता। आप ही आपके सुख के क्वॉटा में से आज सुख खींच लाकर इस्तेमाल करते हो, बाद में भविष्य में यह सुख कम हो जाएगा। यह तो आप आनंद प्राप्त नहीं करते लेकिन वास्तव में तो खो देते हो।

दारू जैसे नशे वाले पेय के सामने दादाश्री लालबत्ती दिखाते हैं कि, यह व्यसन तो मनुष्य को मूर्छित कर देता है और मनुष्य में से जानवर गति की ओर ले जाता है। इसके अलावा इसमें भरपूर हिंसा है। डेवेलप प्रजा को तो यह छूने जैसा ही नहीं। अन्य व्यसन के ज़ोखिम समझाते हुए कहते हैं, बीड़ी-सिगरेट-तम्बाकू शरीर को नुकसान करते

हैं, केन्सर जैसे रोग उत्पन्न होते हैं, एवं इमोशनल करते हैं। चाय का व्यसन भी मन को चंचल करता है। उसके बावजूद दारू जैसे व्यसन में से छूट नहीं पाते हैं तो पान-सुपारी या सिगरेट जैसे छोटे व्यसन पर आकर दारू में से तो तुरंत छूट जाने जैसा ही है। इसके बाद अन्य व्यसन में से भी स्टेपिंग से धीरे-धीरे छूट जाना चाहिए।

व्यसन सिर्फ मनुष्य की स्वतंत्रता पर झपट मारता है और परवश बना देता है। ऐसे व्यसन के ताबे में आपको रहना पड़ता है और उसके परतंत्र रहना पड़ता है वह कैसे पुसाएगा? ऐसे व्यसन के जाल में फँसे हुए सभी लोगों के लिए यह दादाई ज्ञानवाणी एक नया ही उपाय देने वाला ज्ञानप्रकाश बन जाएगी।

इस पुस्तक में दादाश्री ने व्यसन में से मुक्त होने के लिए विविध उपाय बताए हैं। जिसमें से एक उपाय है, चार स्टेप का अनोखा तरीका, जिसमें (1) व्यसन वह गलत है इसका दृढ़ निश्चय रखना है, (2) कैसे गलत है इसकी विगत एकत्रित करके जागृति में रखना है, (3) तय करने के बावजूद जितनी बार फिर से व्यसन होता है उतनी बार प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान करने हैं और (4) कोई इसके लिए गलती निकाले, अपमान करे तब भी उसका रक्षण नहीं करना है।

और जो अभी व्यसन से ग्रस्त नहीं हुए हैं उन्हें भी सचेत करते हुए दादाश्री कहते हैं कि व्यसन में फिसलाने का बड़ा निमित है, व्यसनी का संग! यह संग आपको कब व्यसन में फिसला देगा उसका भरोसा नहीं है। इसलिए इस कुसंग से सचेत रहने जैसा है।

जिसे खुद को व्यसन है उस व्यक्ति के लिए तो इस पुस्तक में से बहुत सारी चाबियाँ मिल ही जाएगी लेकिन साथ ही साथ खुद की नज़दीक की व्यक्तियों में या कुटुम्ब में किसी को व्यसन है, तो उसके साथ खुद कौन सी समझ से व्यवहार करे, उस हेतु दादाश्री की प्रदान की हुई समझ भी नया ही दृष्टिकोण बक्षेगी। जिससे खुद को राग-द्वेष नहीं होंगे और सामने वाली व्यक्ति को भी व्यसन में से बाहर निकलने के लिए पॉज़िटिव साइन होगी।

विविध व्यसन वाले व्यक्तिओं को उलझाने वाले प्रश्नों के समाधान स्वरूप निमित्ताधीन दादाश्री की ज्ञानवाणी निकली है। जिसका, यहाँ एकता लगे और वाचक को व्यसन में से छूटने का सुव्यवस्थित हल मिले, इस तरह संकलन करने का प्रयत्न किया है, जिसमें कहीं क्षति दिखे तो यह ज्ञानवाणी की नहीं लेकिन संकलना की ही क्षति हो सकती है। इस हेतु हृदयपूर्वक क्षमा याचना।

**जय सच्चिदानंद**

# अनुक्रमणिका


[1] व्यसन वह क्या है? व्यसन किसे कहते हैं? 1

[2] व्यसन कैसे लगता है? 4

[3] व्यसन के ज़ोखिम और परिणाम 8

[3.1] चाय, बीड़ी वगैरह व्यसनों के ज़ोखिम और परिणाम 8

[3.2] अल्कोहॉलिक ड्रिंक्स महाज़ोखिमी 12

[3.3] व्यसनी का संग वह बड़ा ज़ोखिम 23

[4] व्यसनों से छूट सकते हैं? 26

[5] व्यसनों से छूटने के प्राथमिक उपाय 29

[5.1] दारू के व्यसन से छूटने के उपाय 29

[5.2] अन्य व्यसनों में से छूटने के उपाय 33

[6] व्यसनों से छूटने का 'चार स्टेप' का अनोखा रास्ता 35

[7] फैमिली में किसी को व्यसन है तो... 43

[8] अक्रम विज्ञान की देन, व्यसनी को मोड़ा मोक्षमार्ग में 45


**नोंध : आत्मज्ञान प्राप्त महात्माओं को व्यसन से छूटने के लिए विस्तारपूर्वक समझने के लिए विस्तृत पुस्तक 'व्यसन मुक्ति का वैज्ञानिक तरीका' पढ़ें। यहाँ इस पुस्तक में विस्तृत पुस्तक का सिर्फ कुछ ही भाग लिया है।**

# व्यसन मुक्ति का मार्ग

## [ 1 ] व्यसन वह क्या है? व्यसन किसे कहते हैं?

### शरीर को अनावश्यक भोजन वह व्यसन

**प्रश्नकर्ता :** दादा, व्यसन यानी क्या?

**दादाश्री :** व्यसन यानी क्या? 'व्यसन' शब्द वह तो किससे बना है? असन में से व्यसन बना है। इस शरीर को आवश्यक है, उसे 'असन' कहते हैं और अनावश्यक है उसे 'व्यसन' कहते हैं। असन यानी खाना और व्यसन यानी विशेष भोजन, विशेष असन। अतिरेक, जिसकी ज़रूरत नहीं है। जिसके बगैर शरीर चल जाए ऐसा है। भोजन की, असन की ज़रूरत है, लेकिन व्यसन की ज़रूरत नहीं है। इस बीड़ी की खास नेसेसिटी (ज़रूरत) नहीं है, उसे आप क्यों रख रहे हैं? चाय, बीड़ी, पान-तम्बाकू वगैरह जिसके बगैर चले ऐसा है, उसे लोग व्यसन कहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** हमें भी बहुत मूवी देखने का व्यसन हुआ हो तो?

**दादाश्री :** उसमें हर्ज़ नहीं, मूवी देखना उसे व्यसन नहीं कहते। व्यसन यानी इन्टॉक्सिकेशन (नशा) है जिसमें, कि जिसके बगैर आपका छुटकारा ही नहीं होता। आपको परवश ही बना देता है। अपने वश कर ले, उसे व्यसन कहते हैं। जबकि टॉकीज में तो आपके वे फ्रेन्ड आएँ तो न जाना हो तो नहीं जाते। उसे व्यसन नहीं कहा जाता, वह तो आदत पड़ गई कहलाती है।

**प्रश्नकर्ता :** तो इस व्यसन को आदत क्यों नहीं कहते और मूवी देखने को आदत क्यों कहते हैं?

**दादाश्री :** आदत यानी जिसमें मन की खुराक होती है, लेकिन देह और वाणी की खुराक नहीं होती। इस व्यसन में तो देह की खुराक होती है। यह सिनेमा व्यसन नहीं कहलाता, उसे आदत कहते हैं। व्यसन तो यहाँ से पीना है आपको। बाह्य चीज़ को आदत कहते हैं। शरीर से संबंधित हो, उसे व्यसन कहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यह व्यसन और आदत, इन दोनों का डिमार्केशन बहुत सूक्ष्म है, किसी को पता नहीं चलता।

**दादाश्री :** नहीं होता, यह तो। व्यसन क्या है, ऐसा जगत् को भान ही नहीं होता न! आदत को व्यसन कहते हैं, व्यसन को आदत कहते हैं। लोग उल्टा बोलते हैं।

## इन्टॉक्सिकेटेड चीज़ों का होता है व्यसन

**प्रश्नकर्ता :** दादा, तो फिर व्यसन में तो सब ज्ञानतंतुओं का हुआ न?

**दादाश्री :** ज्ञानतंतु का व्यसन। यह देखो, बीड़ी-चाय-दारू... यह सुपारी भी थोड़ा ज्ञानतंतु के व्यसन जैसा है। ज्ञानतंतुओं को चाय के स्वभाव का असर होता है। चाय ज्ञानतंतु को असर (करने) वाली है लेकिन बीड़ी जितनी असर वाली नहीं है। बीड़ी तो बहुत असर वाली है, तम्बाकू की वजह से। तम्बाकू तो मुँह से खाता हो न, वह भी असर वाला है। नसवार सूंघता हो वह भी असर वाला है। इन ज्ञानतंतुओं को असर (करने) वाली चीज़ें हैं ये सभी। जबकि दूध पीते हैं सुबह में, वह ज्ञानतंतु को असर वाली नहीं है। यदि दूध पीना रह गया हो तो शोर नहीं मचता। दूध से व्यसन नहीं होता। इन्टॉक्सिकेटेड हैं चीज़ें, उनका व्यसन होता है। दही खाओ, दूध पीओ, आइस्क्रीम खाओ, उसमें हर्ज़ नहीं है। यह जो है, छाछ पीओ, बहुत सारी चीज़ें

हैं। ये आदत वाली चीज़ें नहीं न! इन्टॉक्सिकेशन नहीं न! चाय की आदत पड़ जाती है, सिगरेट की आदत पड़ जाती है। आदत यानी हेबिचूएटेड, जिसके बगैर नहीं चलता। आदत नहीं होनी चाहिए। अगर आदत लग गई हो, तो उसे धीरे-धीरे कम कर देनी चाहिए, या तो निकाल देनी चाहिए।

## अनोखी खोज़बीन, रोग कराता है व्यसन

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आपने कहा न, कि चाय-सिगरेट की आदत पड़ जाती है, तो उसे व्यसन मानें या आदत?

**दादाश्री :** वह वास्तव में व्यसन है, आदत जगत् के लोग कहते हैं, लेकिन हम तो इसे रोग ही कहते हैं। आदत किसे कहते हैं? कि जिसे छोड़ सकते हैं। जबकि यह तो दारू को कहते हैं इसकी आदत पड़ गई है। अरे भाई, आदत-वादत होती होगी? उल्टा करुणा करने योग्य व्यक्ति है, किसलिए ऐसा कहते हो बेचारे को? लोग कहते हैं, आदतें छोड़ दो, छोड़ दो। अरे, कैसे छूट सकती हैं वे? जो छोड़ने से छूट जाए उसे 'आदत' कहते हैं और छोड़ने से नहीं छूटती उसे 'रोग' कहते हैं। यह समझ में नहीं आता, इसलिए फिर लोग ऐसा नाम देते हैं कि आदत-बुरी आदत पड़ गई है।

एक व्यक्ति दारू पीता है, वह भी रोग है और यह हुक्का पीता है, वह भी रोग है और सारे व्यसन हैं, वे भी रोग हैं। जबकि डॉक्टर और पूरा जगत् भी क्या जानता है कि 'तुम बगैर काम के व्यसन करते हो'। अरे भाई, रोग है। बगैर काम के करता होता तो दूसरे दिन छूट जाता। जब बंद करना हो तब बंद हो जाता है। वह रोग है, तो क्या हो सकता है? अब, यह बीड़ियाँ पीता है, तो उन बीड़ियों से भीतर जो रोग उत्पन्न होता है, वह रोग ही उसे बीड़ी पिलाता है। अब, यह जो टेढ़ा व्यक्ति होता है न, तो आप खाते समय जाँच करो तो भाई वातकारक (चीज़ें) ही खाता होता है क्योंकि टेढ़ा है इसलिए ये वातकारक चीज़ें खाता है। यानी यह रोग ही खाता

है, रोग दारू पीता है, रोग ये बीड़ियाँ पीता है, रोग सिगरेट पीता है। सब रोग ही कर रहा है। अब, यदि उस रोग का नाश किया जाए तो बीड़ी बंद हो जाएगी। यानी इस व्यसन को छोड़ने से छूट जाए, ऐसा नहीं है। लेकिन यह रोग है, उसे यदि दवाई दी जाए तो वह खत्म हो जाता है।

व्यसन वे व्यसन नहीं, पर रोग हैं। यह रोग कुछ हद तक हो चुका हो, तब तक छूट सकता है। फिर वह रोग बढ़ गया, तब तो वह रोग ही है, जो उसे पकड़ लेता है लेकिन व्यसन वह रोग है, वह हमने कहा था। अभी भी फॉरिन के लोग जानते नहीं हैं कि यह रोग है। यदि रोग होता तो दवाई ढूँढ निकालते, वे जानते तो। सिगरेट पीते हैं, वह क्या है? ज्ञानतंतु की निर्बलता का रोग है। अब, ज्ञानतंतु की दवाई दी जाए तब ही सिगरेट बंद होगी। रोग खत्म हो जाता है तो वह बुरी आदत छूट जाती है। यह हमारी खोज़बीन है! किसी को कुछ प्रकार के, किसी को कुछ प्रकार के रोग होते हैं। रोग हो उसकी दवाई होती है। हम उस रोग की दवाई ढूँढ निकालेंगे!

# [ 2 ] व्यसन कैसे लगता है?

## व्यसन, वह खुद की इच्छा का परिणाम

**प्रश्नकर्ता :** दादा, व्यसन यों सहज तौर पर होते रहते हैं।

**दादाश्री :** व्यसन आपखुदी (जोर जुल्म) हैं। इस शरीर पर आपखुदी (खुद का सर्वोच्च अधिकार) करते हो तो व्यसन के रूप में।

**प्रश्नकर्ता :** वह सहजभाव नहीं है? उसमें सहजभाव नहीं है?

**दादाश्री :** बाद में सहज हो जाता है। पहले खुद आपखुदी करता है, बाद में सहज हो जाता है। शरीर का स्वभाव तो बेचारे को जैसी आदत डालो वैसा उस रास्ते पर दौड़ता है फिर। लेकिन खुद आपखुदी करता है। शरीर पर खुद आपखुदी नहीं करनी है।

**प्रश्नकर्ता :** व्यसन में पड़ने की अंदर से इच्छा नहीं होती, लेकिन फिर भी पड़ जाते हैं।

**दादाश्री :** घर में से बाहर नहीं निकलना हो आपको, फिर भी निकल जाते हो? निकल जाते हो फिर बाहर?

**प्रश्नकर्ता :** अपने आप तो नहीं निकलते।

**दादाश्री :** इच्छा नहीं होती तो कुछ भी नहीं होता। बीड़ी, वह इच्छा का परिणाम है। इच्छा होती है तो बीड़ी पीते हैं, वर्ना नहीं पीते कभी भी। दारू भी इच्छा (करने) वाला दारू पीता है, इच्छा न हो वह नहीं पीता। इच्छा करने वाला बैठा है इसलिए ये सभी जाल में फँसते रहते हैं। इच्छा ही न हो, उसे कुछ भी नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** अभी इच्छाएँ जो होती हैं, वे तो ऑटोमेटिक (अपने आप) हो जाती हैं, तो उसका हम क्या कर सकते हैं?

**दादाश्री :** अभी नहीं करते लेकिन पहले करते तो थे न? करे बगैर इच्छा कैसे हो सकती है? आपको बीड़ी पीने की इच्छा है तो बीड़ी पीते हो और बीड़ी पीने की इच्छा नहीं होती तो नहीं पीते। बीड़ी पीने की इच्छा नहीं होती, उसे ऐसा कर्म नहीं होता। इच्छा वाले को ऐसा कर्म होता है और नहीं इच्छा वाले को वैसा कर्म होता है।

## दिखाई दे ऐसा प्रमाण मिलते ही लफड़ा चिपक जाए

इस भाई को कितने ही लफड़े चिपक गए हैं! सिगरेट-विगरेट वगैरह सब, कितने ही लफड़े! प्रमाण मिलते लफड़ा चिपक जाता है। एविडन्स सभी मिलते हैं तो लफड़ा चिपक जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** प्रमाण मिलते ही। प्रमाण यानी?

**दादाश्री :** यह बीड़ी है वह एक लफड़ा कहा जाता है। तो कौन से प्रमाण मिलते हैं? पहले ऐसा फ्रेन्ड सर्कल मिलता है, यानी

जो पीता न हो वह कहता है, 'मेरा सिर दु:ख जाता है'। इसके बाद दूसरा कहता है, 'थोड़ी तो पी, दो दम लगा।' ऐसा कराते-कराते पूरा दम मराते हैं। ऐसा करते-करते लफड़ा चिपक जाता उसको। ये सारे प्रमाण मिलते हैं तब फिर लफड़ा चिपक जाता है और अच्छे व्यक्तिओं के साथ गया हो, बीड़ियाँ न पीते हों वहाँ गया हो तो चिपकता है? तो ये सारे प्रमाण मिलते हैं तब लफड़ा चिपकता है। दिखाई दें ऐसे प्रमाण हाँ, वे सरकमस्टेनिशयल एविडन्स (सांयोगिक प्रमाण) नहीं। दिखाई दें ऐसे प्रमाण! आपके वहाँ कोर्ट में दिखाई दें ऐसे प्रमाण लिए जाते हैं न? आँखों से दिखाई दें ऐसे प्रमाण न? तो ये भी दिखाई दें ऐसे प्रमाण हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यह व्यसन की आदतें जो पड़ती हैं, वे चित्त के आधार पर पड़ी हुई हैं?

**दादाश्री :** यह चित्त के आधार पर पड़ी है, लेकिन चित्त तो सभी को होता ही है। चित्त तो अभी भी है ही न? अभी क्यों आदत नहीं पड़ती? यह उल्टा देखने से पड़ती है। इस जगत् का सब देखना उल्टा होता है न, तो उल्टा देखा कि आदत पड़ जाती है। बाद में नहीं निकलती।

**प्रश्नकर्ता :** देखा-देखी से आदत पड़ती है?

**दादाश्री :** हाँ। और क्या हितकारी-अहितकारी देखते हैं? सामने वाला कहता है, 'एक तो लो, एक तो लो', तब कहता है, 'हाँ लूँगा..' इसमें अहंकार करता है, 'लो मैं भी दम लगाता हूँ'। सामने वाला कहता है, 'ऐसे लगा दम', तो मारता है दम पहला। पहले सिर में चक्कर आते हैं लेकिन ध्यान नहीं देता, इसलिए फिर वह शुरू हो जाता है। अहंकार का स्वभाव ऐसा है कि सीखता सब है और सीखाने वाले भी मिल जाते हैं। सब देखने से सीख जाता है। फिर फँस जाने के बाद वे सभी दोस्त चले जाते हैं। उड़ जाते हैं सभी पक्षी। फिर यह अकेला ही शोर मचाता रहता है, बीस-बीस सिगरेटें लेकर घूमता

है! यानी लोगों के दिखाए अनुसार अहंकार सुख ढूँढता है। फिर उसमें फँस जाता है, व्यसनों में।

## अभिप्राय से पड़े गाँठ, दूसरे जन्म में संयोग मिलते ही फूटे

कई लोगों को तो स्पर्श भी न किया हो, लेकिन विचार आते हैं कि 'करने जैसा है'। परंतु अगले जन्म के लिए गाँठ पड़ जाती है बाद में। आप कोई ब्रांडी वाले के साथ जाओ और वहाँ पर एक-दो बार नहीं पीओ, बाद में मन में ऐसा होता है कि हर्ज़ क्या है पीने में? लेकिन उसके बावजूद भी पी नहीं पाए। अभिप्राय बदल गया, लेकिन अभी पी नहीं पाए। पीने का अभी योग नहीं बैठा। अब, उस समय ग्रंथि पड़ गई यह। क्या हुआ? अभिप्राय में से मन बंध गया। यह ग्रंथि पड़ गई। यह ग्रंथि अगले जन्म में फूटती है, तब आप पीते हो यह। इन गांठों में से फिर से संयोग इकट्ठे होते हैं, एविडन्स इकट्ठा हुआ कि फिर फूटता है। उसको (संयोग) मिला, उसका फ्रेन्ड-ब्रेन्ड मिला कि वह दुकान मिली कि यह गाँठ फूटती है।

**प्रश्नकर्ता :** आपने ऐसा कहा कि, सांयोगिक प्रमाण के आधार पर, संग दोस्ती के आधार पर उसे विचार आते हैं। परंतु उसके जो दोस्त हैं उनके साथ संगत करता है या करने के लिए प्रेरित होता है और जिसमें से वह संस्कार खुद स्वीकारता है, उसकी आदतें डालने की शुरुआत करता है, तो वह आदत डालने के लिए मार्गदर्शक कौन?

**दादाश्री :** वह तो नेचर ही है सब। वह भी गलत व्यक्ति का संग होता है न, तो आपको बुरी आदतें पड़ जाती हैं। अब, गलत व्यक्ति का संग होना वह अपना पूर्व का कुछ दोष होगा तभी यह संयोग मिलता है। लेकिन संयोग यदि जल्दी छूट जाए तो अच्छा। संयोग छूट तो जाता ही है और कई संयोग तो पूरी ज़िंदगी तक चलते हैं। लेकिन संयोग है, इसलिए कभी न कभी छूट जाएगा।

## बुद्धि के निर्णय से आते हैं और छूटते हैं व्यसन

**प्रश्नकर्ता :** इन व्यसनों के लिए बुद्धि जिम्मेदार है?

**दादाश्री :** बुद्धि ही जिम्मेदार है न! बुद्धि ही, सही-गलत का निर्णय ही वह करती है न! और निर्णय होता है तब फिर (व्यसन) लग जाता है, वर्ना अपने आप नहीं लगता। सही-गलत का निर्णय वह बुद्धि का काम है।

**प्रश्नकर्ता :** यह तो दादा, बहुत बीड़ी पीता हो और फिर हार्ट अटैक आ जाए और डॉक्टर कहें, कि यह बीड़ी छोड़ दो तब ऐसा लगता है कि यह तो नुकसानदायी है, इसलिए छोड़ देता है फिर।

**दादाश्री :** हाँ, यानी बुद्धि का काम फायदे-नुकसान का है। बुद्धि जब फायदे-नुकसान को समझती है, ऐसा उसे कोई दिखाए, इसमें क्या फायदा है, इसके भीतर परेशानी है, ऐसा-वैसा... इसलिए वह जानता है कि 'यह तो नुकसान है!' तो यह बुद्धि उसे छोड़ने को कहती है। करती तो बुद्धि ही है, छोड़ती भी बुद्धि ही है। लेकिन बुद्धि फायदे-नुकसान को समझ जाती है। मैं भी उतना ही दिखाता हूँ, इसमें क्या फायदा? यह तो भूत की बला लगने जैसी यह बला लग गई है! तब उसको समझ में आता है! समझदार और संस्कारी हो तो तुरंत समझ जाता है, कि भाई, यह वास्तव में बला है। वह छूट गई। बुद्धि की पकड़ ज़रा ढीली हुई कि छूट गई, अपने आप छूट जाती है। बुद्धि पकड़ ढीली करती ही नहीं। कुछ छोड़ना हो न, यह चाय या बीड़ी कुछ, तो बुद्धि पकड़ ढीली करती ही नहीं और यदि ढीली करती है तो छूट जाती है। ढीली नहीं करती। अब, वह ढीली कब करती है? उसे कोई फायदा-नुकसान दिखाने वाला ऐसा एक्ज़ेक्ट बता दे तो!

# [ 3 ] व्यसन के ज़ोखिम और परिणाम

## [ 3.1 ] चाय, बीड़ी वगैरह व्यसनों के ज़ोखिम और परिणाम

### व्यसन याद आएँ और सहजता तोड़ें

व्यसन तो एक बला है, बला। परेशानी की बला है। यह चिपकने

के बाद, उल्टा यह न हो तो पूरा दिन व्यर्थ जाता है। व्यसन सेवन करने जैसी चीज़ ही नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** व्यसन ने हमको जकड़ा है या हमने व्यसन को जकड़ा है?

**दादाश्री :** व्यसन तो वितराग है। तम्बाकू तो वीतराग है। आप उसे चिपकोगे तो फिर उसकी इफेक्ट होती रहेगी, इफेक्ट फिर छूटती नहीं। आपको सोचना चाहिए था। चाय की आदत करके देखो और मसाले वाले दूध की आदत करके देखो। मसाले वाला दूध आपको नहीं चिपकेगा और चाय चिपकेगी क्योंकि इन्टॉक्सिकेशन है। यानी किस के साथ दोस्ती करते हैं यह सोच लेना चाहिए पहले से।

आप यात्रा में गए और सुबह से कुछ नहीं मिला तो पहले क्या याद आता है?

**प्रश्नकर्ता :** चाय याद आती है।

**दादाश्री :** याद आती है और याद आती है तो परेशान करती है। कुछ भी याद न आए ऐसा जीवन होना चाहिए। तो ये व्यसन याद लाते हैं। जो आपको याद कराते हैं और सहजता तोड़ते हैं, वे मादक चीज़ें कहलाती हैं सब। चाय याद आती है, कॉफ़ी याद आती है। जबकि दूध पीते हैं या और कुछ भी करते हैं और जलेबी खाते हैं तो कुछ याद-वाद नहीं आता ऐसे। और अगर जलेबी खाने की पंद्रह दिन से, महिने से आदत है तो दो दिन याद आएगी, फिर कुछ भी नहीं, भूल जाते हो आप। लेकिन चाय आप पीते हैं तो एक दिन न मिले और सात बज़ गए, आठ बज़ गए, उसके बाद आप उसके ध्यान में पड़ जाते हो, चाय के। किसमें पड़ जाते हो?

**प्रश्नकर्ता :** उसके ही ध्यान में होते हैं।

**दादाश्री :** वह कंट्रोल ले लेती है आपका। कंट्रोल ले लेती है तब कोई पूछे, 'क्यों बैठे हो?' 'भाई, अभी तो चाय आए बगैर संड़ास

भी कैसे जाऊँ?' कहेगा। यानी संड़ास, बेचारा उसके आधार पर बैठा रहता है। कितने सारे तूफान! और सिर्फ चाय नहीं, फिर सिगरेट भी चाहिए तब संड़ास होता है! लो, कितने फँसाव हैं ये। तूने अवलंबन लिया इसलिए भीतर स्वतंत्रता छीन जाती है। तुझे परतंत्रता पसंद है ऐसी? अवलंबन यानी परतंत्रता। चाय के परतंत्र हुए, सिगरेट के परतंत्र हुए। न पीए तो भगवान याद नहीं रहते लेकिन वे याद रहते हैं। तब ऐसे भगवान के बजाय अपने यह भगवान अच्छे हैं बेचारे, सिगरेट के भगवान के बजाय! जबकि देखो, मुँह सुगंधीदार बनाता है! सात रूपये की सिगरेट पीते हैं और मुँह सुगंधीदार, अच्छा नहीं होता? मुँह बास मारता है। उसे खुद को बदबू नहीं आती लेकिन सामने वाले को तो बदबू आती है।

## इन्टॉक्सिकेशन करे, अनंत जन्मों की ख़राबी

**प्रश्नकर्ता :** चाय-कॉफ़ी जो हैं, वे भी माइन्ड के लिए अच्छे नहीं हैं ऐसा कहते हैं, ठीक है?

**दादाश्री :** ये तो इन्टॉक्सिकेटेड ड्रिंक्स हैं न! यह चाय पीकर भी उत्तेजना ही होती है न, और क्या करती है ये? चाय पीते हैं तब भीतर जोश है, उसे प्रकट करती है वह। इसलिए यह जोश फिर भीतर कम हो जाता है। नया उत्पन्न नहीं होता। अपने आप जोश आए उसे कुदरती कहते हैं और यह तो भीतर से उत्पन्न किया है। दवाईयों से उत्पन्न करते हैं वह सब भी यही है, उसके जैसा ही सब। यानी ये सब उत्पन्न किया है। अर्थात् इन्टॉक्सिकेशन (नशा, मादकता) कोई चीज़ नहीं होनी चाहिए।

तुझे परतंत्रता है क्या? चाय और सिगरेट वगैरह सब?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं। दादा, अब तो ये पान और पुड़िया की आसक्ति बहुत आ गई है।

**दादाश्री :** ऐसा? पान अलग और मसाला (तम्बाकू) अलग?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, यानी वह प्लास्टिक के काग़ज में बाँधकर देता है, पुड़िया और पान अलग।

**दादाश्री :** लो, ये कितने पुण्यशाली लोग! मैं अपने घर 1936 में पान की डिब्बी ले आया था, घर पर पान खाने के लिए। तो महिना-दो महिना पान रखकर खाया। फिर वह डिब्बी पड़ी रह गई, ऐसी की ऐसी ही पड़ी हुई है। तो हीराबा साफ करते रहते थे। यह बगैर काम का, यह क्या हाल हुआ! जितना लाए उतना हमें फिर याद रखना पड़ता है! डिब्बी को हमें याद रखना पड़ता है। हमें पान लेने जाना पड़ता है। वहाँ जाते हैं, लेकिन पान की दुकान बंद होती है, हम जिसके वहाँ खाते हैं वह, यानी राह देखनी पड़े फिर। अरे भाई, ऐसा तो रास आता होगा? यानी पान-वान कुछ भी नहीं चाहिए। ये सब आसक्ति नहीं थी तो फिर ये बढ़ाई! जीने के लिए ज़हर पीते हैं! किसलिए? जीने के लिए ज़हर पीते हैं और यह ज़हर वह वाला नहीं है, अभी का अभी खत्म हो जाए ऐसा नहीं है, माइल्ड ज़हर! कैसा? जीवित रहते हैं, धीरे-धीरे मरते हैं। यह रास्ता क्या गलत है?

भोजन-वोजन कुछ बाधक नहीं है। खीर खाओ तो कुछ बाधा नहीं करता, लेकिन ज़्यादा खाते हैं तो बाधक है। और बाधक क्या है? इन्टॉक्सिकेशन। चाय, बीड़ी, ब्रांडी, फलाना, ये सब इन्टॉक्सिकेशन हैं। गांजा, भांग ये सब आत्मा को आवरित कर देते हैं एकदम। चाय भी आवरित कर देती है। लेकिन चाय वह धीमा पोइज़न (ज़हर) है। बहुत धीमा। बहुत साल से पी हो तो थोड़ा पोइज़न होता है लेकिन पोइज़न तो है ही न! इन्टॉक्सिकेशन वहाँ पोइज़न। उससे ज़्यादा बीड़ी; बीड़ी बहुत आगे है। मूल पता ही नहीं चलने देती और ब्रांडी तो व्यक्ति को खत्म ही कर देती है। जबकि ये गांजा, भांग तो (होश) उड़ा ही देते हैं। आसमान में उड़ाते हैं, वह उड़ता रहता है। गांजा, भांग से ब्रांडी अच्छी। ये सब कचरा माल हैं, ये न घुसे तो उत्तम! छूना नहीं है इन किसी भी चीज़ को, बीड़ी-सिगरेट को भी नहीं छूना चाहिए। ये पोइज़नस चीज़ें हैं सभी। अनंत जन्म की बरबादी कर देगी।

एक जन्म की नहीं। इसलिए शास्त्रकारों ने कहा है कि यह तम्बाकू है, इन सभी चीज़ों को छूने मत देना और छू लिया तो तुरंत जल्दी से जल्दी अलग हो जाना वर्ना अनंत जन्म खराब कर देंगे। यानी शास्त्रकारों ने सबसे पहली मुक्ति किससे करवाई है? तब कहते हैं, व्यसन से!

## [ 3.2 ] अल्कोहॉलिक ड्रिंक्स महाज़ोखिमी

## अपने ही भविष्य के आनंद का हिस्सा आज बाहर लाए

**प्रश्नकर्ता :** व्यसनों में से आनंद मिलता है, वह कहाँ तक सत्य है?

**दादाश्री :** व्यसनों में आनंद होता ही नहीं। तुझे किसने कहा कि व्यसनों में से आनंद मिलता है?

**प्रश्नकर्ता :** यह दारू पीना, मांस खाना, सिगार पीना ये सब भौतिक आनंद तो देते हैं न!

**दादाश्री :** इसमें आनंद होता होगा? यह तो अपने आत्मा में निर्बलता घुसाकर, यह दारू पीते हो। आत्मा में निर्बलता घुसाकर, आत्मा मूर्छित करते हो! इसे आनंद कैसे कह सकते हैं? आनंद तो नहीं आता, खोते हो।

**प्रश्नकर्ता :** दारू से मानों दु:खों के सामने शक्ति मिलती है, ऐसा लगता है!

**दादाश्री :** दारू, मैं आपसे कह देता हूँ। ये जो इन्टॉक्सिकेटेड ड्रिंक्स हैं न सब, ये क्या हैं? आपकी जो शक्तियाँ अंदर पड़ी हुई हैं, आगे की ज़िंदगी में ज़रूरत की शक्तियाँ जो अंदर पड़ी हुई हैं, उसे उठाकर बाहर लाते हैं आज। क्या करते हैं? भीतर जो शक्ति थी, उसे रोज़ इस्तेमाल करनी थी, उसे एक ही दिन में व्यर्थ कर दे तब फिर उसे दस दिन तक ढीलाकर देता है, खत्म कर देता है। हर रोज़ इस्तेमाल करने की शक्ति होती है न, उसे व्यसन में एक दिन में पूरा

कर देता है। उस दिन उल्लास में आ जाता है, लेकिन बाद में यूज़लेस हो जाता है व्यक्ति। दारू का नशा, उसे उत्तेजना कहते हैं। बाद में उतर जाता है और डिप्रेशन देता है। यह आनंद दारू नहीं देता। आपके पिछले आनंद का जो क्वॉटा है, उसमें से ही बाहर निकालता है, इन्टॉक्सिकेट करता है। वह ब्रांडी हो या सिगरेट हो, तम्बाकू या हशीश (गांजा, भांग), अन्य कुछ भी हो। यानी बात तो समझनी पड़ेगी न, यह इन्टॉक्सिकेटेड क्या है? खुद के भीतर जो है वह बाहर लाता है। नयी चीज़ नहीं निकालता वह।

## भान भुलाए वह चीज़ कैसे छू सकते हैं?

वह प्रत्याघाती इफेक्ट क्या देती है बाद में?

**प्रश्नकर्ता :** सिर दर्द होता है।

**दादाश्री :** नहीं, लेकिन यह सिर दर्द होना वह प्रत्याघाती इफेक्ट नहीं है। बेभान हो जाएगा। यह जो थोड़ा बहुत भान है वह भी चला जाएगा! लेकिन यह किसलिए ऐसी मूर्छा करनी पड़ती है?

**प्रश्नकर्ता :** चिंता कम हो उसके लिए।

**दादाश्री :** चिंता कम होती है? चिंता का उपाय और कुछ करना चाहिए, ऐसा उपाय नहीं करना चाहिए। यह दारू वह उसका उपाय नहीं है। क्या हेल्प करती है दारू? यह तो एक प्रकार की साइकोलॉजिकल इफेक्ट है। ये लोग पीकर यों मस्ती में घूमते हैं। यह मस्ती किस काम की है? इस मस्ती के बजाय वरीज़ (चिंता) अच्छी! दारू ज़्यादा पी लोगे तो क्या होगा?

**प्रश्नकर्ता :** तो लुढ़कता रहता है। हाँ, भान चला जाता है सारा।

**दादाश्री :** बेभान हो जाता है। आत्मा बेभान हो जाए, वह काम करने जैसा नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा थोड़े ही बेभान हो जाता है? वह तो जाग्रत ही होता है न?

**दादाश्री :** मूल आत्मा तो निरंतर जाग्रत ही है लेकिन यह व्यवहार आत्मा है न, उसे तो डलनेस (सुस्ती) नहीं आनी चाहिए। ऐसे कारण नहीं होने चाहिए। मूर्छा लाए न, ऐसी चीज़ मनुष्यों को छूनी नहीं चाहिए। जो अपना भान भुला दे, उस चीज़ को कैसे छू सकते हैं? छूना ही नहीं चाहिए न!

हम जो यह भोजन खाते हैं न, उसकी घंटे-देढ़ घंटे बाद ब्रांडी ही हो जाती है और फिर सुस्ती चढ़ती है। फिर हम भूल जाते हैं सारी बातें। फिर उस समय एसे (निबंध) लिखना हो न तो नहीं लिख पाते। फिर सुस्ती उतरने के बाद एसे लिख सकते हैं। यानी ये सब ब्रांडी ही है न, और फिर वह ब्रान्डु (ब्रांडी) भीतर डाला! और ये तो आवरण लाने वाली चीज़ें हैं। अपना भोजन वह भी तो आवरण लाने वाली चीज़ है, परंतु कोई चारा नहीं है। लेकिन जिसका चारा (उपाय) होता है, उसे क्यों ले?

## दारू का आवरण हटता नहीं और खो देते हैं डेवेलपमेन्ट

**प्रश्नकर्ता :** दारू का असर आत्मा पर से नहीं जाता?

**दादाश्री :** कैसे जा सकता है यह? फिर भी आदत पड़ गई हो तो मैं रास्ता निकाल देता हूँ, पर क्या कर सकता हूँ? लेकिन दारू यानी तो दिमाग में फिर असर हो जाता है, दिमाग में बदलाव होते हैं। यानी उसके बाद आत्मा पर भ्रांति के आवरण आ जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यह पीने से दिमाग को नुकसान कैसे होता है?

**दादाश्री :** यह भान भुला देता है न, उस समय अंदर जागृति पर आवरण आ जाता है और फिर हमेशा के लिए वह आवरण जाता नहीं है। आपको मन में ऐसा लगेगा कि चला गया, लेकिन नहीं जाता वह। ऐसा होते-होते सारे आवरण आते आते आते फिर मनुष्य जड़

जैसा हो जाता है। फिर उसे अच्छे विचार-बिचार कुछ भी नहीं आते। दारू के व्यसन से डेवेलपमेन्ट कमज़ोर पड़ जाता है, समझ शक्ति कम हो जाती है। उससे भीतर आवरण उत्पन्न होते हैं। ब्रांडी पीने के बाद आवरण वाले हो जाते हैं न, फिर खत्म हो जाते हैं। नये आवरण आ जाते हैं उस पर, बहुत सारे आवरण हो जाते हैं। अधोगति में ले जाते हैं ये सब। यानी जो डेवेलप हुए हैं, उनका इस दारू में से बाहर निकलने के बाद ब्रेइन बहुत अच्छा डेवेलप हो चुका होता है। उन्हें वापस फिर से नहीं बिगाड़ना चाहिए।

## मनुष्य में बेभान होता है इसलिए जानवर का जन्म आता है

अब, लोग किसलिए पीते होंगे? तब कहते हैं, देखा देखी से पीते हैं और दूसरा, वह कोई बाहर का दु:ख हो न, वह दु:ख असर न करे इसलिए मूर्छित कर देते हैं। अब, ऐसे मूर्छित हो जाए, मनुष्य में मूर्छित हो गए इसलिए मनुष्य जन्म फिर से नहीं मिलता, अधोगति में जाते हैं। यानी जानवर में जाते हैं फिर। मूर्छा जानवर में होती है न, ज़्यादा? अर्थात् मनुष्य में तो भान जैसे-जैसे बढ़ता जाता है वैसे-वैसे ऊर्ध्वगति होती है।

दारू और माँसाहार से ये जो कर्ज़ होता है, दारू और माँसाहार में जो सुख भोगते हैं, यह सुख रिपे (लौटाते) करते समय जानवर में जाना पड़ता है। यह जगत् पोलम्पोल (गड़बड़-घोटाला) नहीं है। यह रिपे वाला जगत् है। सिर्फ आंतरिक सुख को ही रिपे नहीं करना पड़ता। बाकी सब बाहर के सुख, वे सारे रिपे करने हैं। आपको जितनी रकम उधार लेनी हो उतनी लेना और फिर उतनी वापस लौटानी पड़ेगी।

**प्रश्नकर्ता :** अगले जनम में जानवर होकर रिपे करना पड़ेगा वह ठीक है, लेकिन इस जन्म में क्या होगा उसका? इस जन्म के क्या परिणाम हैं?

**दादाश्री :** इस जन्म में, उसे खुद को आवरण आ जाते हैं यानी

जड़ जैसा, जानवर जैसा ही हो गया होता है। मनुष्य जानवर जैसा हो जाता है फिर। जानवर में और उसमें फर्क ही नहीं क्योंकि उसकी जागृति सारी खत्म हो जाती है। जैसे जागृति बढ़ती है वैसे मनुष्य उत्तम होता है। मनुष्य को जागृति बढ़ानी है उसके बजाय जागृति खत्म हो जाएगी। यानी फिर जानवर हो जाएगा। जानवर होने का साधन है यह।

मूर्छा कैसे पुसाए? मनुष्य मूर्छित हो जाए तो किस काम का? यों तो ये शास्त्रकार इन लोगों से क्या कहते हैं, कि खुली आँखों से सो रहा है पूरा जगत्! किसलिए सोते हैं? तब कहते हैं, घर और व्यापार दो ही जगह पर जागृति है उनकी। अन्य किसी जगह उसकी जागृति नहीं है। व्यापार में, घर में बहुत जागृति रखते हैं, लेकिन परलोक में मेरा क्या होगा उसकी जागृति नहीं होती। यानी इस तरह सोते हैं, ऊपर से दारू पीते हैं तब ज़्यादा सोते हैं वे। यह पीया यानी दूसरी बार सो गए वापस, डबलिंग (दोगुना) किया। यह रोग तो नहीं गया और दूसरा रोग उत्पन्न किया।

निद्रा में से जाग्रत होने का रास्ता जगत् में किसी के पास नहीं है। जागृति में से निद्रा में आने का रास्ता है। दारू पीते हैं तो निद्रा में आ जाते हैं।

## दवाईयों में अल्कोहॉल आए तो वहाँ क्या करें?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, दवाई में भी अल्कोहॉल होता है न, तो उसे नहीं लेनी है?

**दादाश्री :** दवाई पीनी है, दवाई पीना। दवाई में आए, उसमें हर्ज़ नहीं है। यह तो जानबूझकर इरादे से, बगैर दवाई के, मोज़-मस्ती के लिए पीते हैं। दवाई में पीना। दारू है ऐसा मानकर मत पीना। इन दवाईयों में दारू है, उसमें हर्ज़ नहीं है। आखिरकार, आप उसे दवाई कहते हो न? दारू नहीं कहते न?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** तो हर्ज़ नहीं है।

## यह कब अन्लिमिट हो जाए, वह कह ही नहीं सकते

ब्रांडी पीता है, कभी-कभार?

**प्रश्नकर्ता :** कभी-कभार।

**दादाश्री :** हाँ, यानी मेरा कहना यह है कि कभी-कभार करते-करते वह फिर कभी हेबिट पड़ जाती है न, तो फिर व्यक्ति खत्म हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** प्रमाण से पीए तो उसमें क्या गलत है?

**दादाश्री :** लेकिन उसमें फायदा क्या है, उसे प्रमाण से पीने में? प्रमाण से हमेशा के लिए रह नहीं सकता मनुष्य। कब तक अच्छा रह सकता है? जब तक लाइफ रेग्युलर चलती है न, तब तक प्रमाण से रहता है और इरेग्युलर होने लगा कि ज़्यादा पीने लगता है। बाद में मनुष्य आउट ऑफ कंट्रोल हो जाता है। मैंने सभी को देखा है, इन सभी को। वह कब अन्लिमिट हो जाए वह कह ही नहीं सकते, दारू और ये सब। सिगरेट भी कब अन्लिमिट हो जाए वह कह नहीं सकते। चाय भी ऐसी है, लेकिन सिर्फ चाय को कंट्रोल में रख सकें ऐसी चीज़ है। बाकी सिगरेट का कंट्रोल नहीं रहता। यह आप रोज़ चार सिगरेट पीते हो, तो कभी-कभार छः पी लोगे, कभी-कभार आठ पी लोगे, बारह भी पी लोगे।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन यह पीना, यह सब काबू में रख सके ऐसी शक्ति भगवान ने दी है न?

**दादाश्री :** काबू में कब तक रख सकते हैं? जब तक लाइफ रेग्युलर है, तब तक। जबकि कुदरत के घर कब इरेग्युलर होगा, वह कह नहीं सकते। व्यापार उल्टा-सीधा हो जाता है, नुकसान होने लगता

है तब उस समय वह ज़्यादा पीने लगता है, फिर बिगड़ जाता है वह। मनुष्य खुद कैसे कंट्रोल कर सकता है? इनका सामर्थ्य ही क्या है बेचारों का? कंट्रोल में रहे ऐसी चीज़ नहीं है यह। फिर कभी वापस उल्टे रास्ते पर चला जाता है वह। एक दिन चिंता-वरीज़ बढ़ गई हो तो ज़्यादा पी लेता है। बाद में हमेशा के लिए भटकता रहता है, इसलिए इसे छूने जैसा ही नहीं।

## ज्ञानी की करुणासभर बिनती, 'न घुसने देना दारू को'

दारू तो पीनी ही नहीं चाहिए आपको, यह लेबरर (मज़दूर) लोगों के काम का है। बाकी लोगों को पुसाए वे करें। आपको नहीं छूना चाहिए। यह दारू पीने से आप ही फँस जाते हैं बाद में। फँसने के बाद छूट नहीं पाएँगे और मैंने देखा है, लोग बहुत दु:खी हुए हैं बाद में। फिर छूट नहीं पाते, तो बहुत दु:खी होते हैं बेचारे। इसलिए हम तो आपको लाल झंडी दिखाते हैं। अभी भी जब तक आदत न पड़ी हो, तब तक उससे मुक्ति ले लेना। यानी यह ब्रांडी की आदत और ये सब मत घुसने देना। मैं तो आपसे बिनती करके कहता हूँ कि भाई, यह मत घुसने देना, वर्ना फिर फँसने के बाद आप निकल नहीं पाओगे। यानी हमारी आज्ञा का पालन न करो तो हमारी इतनी बिनती ही स्वीकार लेना। बिनती स्वीकारने में हर्ज़ है चंदुभाई* ? बिनती मंजूर करोगे?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, हाँ।

## नहीं शोभा देती दारू आर्यप्रजा को, बनाए अनाड़ी

**दादाश्री :** ये फॉरेन वाले दारू पीएँ, माँसाहार करें, चाहे कुछ भी करें उनके लिए हर्ज़ नहीं है, इन्डियनों के लिए हर्ज़ है। जो पुनर्जन्म को समझते हैं, उनकी ज़िम्मेदारी है। पुनर्जन्म को नहीं समझते, <u>उनकी ज़िम्मेदारी</u> ही कहाँ है? ये छोटे, किन्डरगार्टन के बच्चे कप

* चंदुभाई की जगह पर वाचक अपना नाम समझे

तोड़ दें तो उनकी ज़िम्मेदारी नहीं है, लेकिन समझदार तोड़ दे तो उसकी ज़िम्मेदारी है। यानी ये तो बालक ही हैं, इनके लिए सारी छूट है, इन्डियन्स के लिए छूट नहीं है क्योंकि हम पुनर्जन्म को मानते हैं, कि यह कर्म किया इसकी ज़ोखिमदारी मेरी है, ऐसा मानते हैं हम। नहीं मानते?

**प्रश्नकर्ता :** लगभग सभी, बहुत सारे मानते हैं।

**दादाश्री :** यानी वे जो करते हैं न, उनके साथ आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। आप तो होल एन्ड सोल रिस्पॉन्सिबल हो (पूर्ण रूप से ज़िम्मेदार) और वे रिस्पॉन्सिबल बिल्कुल भी नहीं हैं। जबकि आपकी जागृति बहुत बढ़ी हुई है। उन्हें तो जागृति ही नहीं है बेचारों को इस अंदर की बाबत की। बाहर की बाबत की सारी जागृति सुंदर है, बाह्य जागृति। आंतरिक जागृति नहीं है।

हम इन्डियन ब्लड, आर्यप्रजा हैं। अनाड़ीपन तो नहीं ही आना चाहिए न! हम आर्यप्रजा हैं और आर्यप्रजा को ये चीज़ शोभा नहीं देती। हम आर्यप्रजा है या नहीं? अभी जबकि अनाड़ी जैसा हो गया है। परंतु मूल आर्य हैं, तो हम आर्य सुधर सकें ऐसे हैं। यानी हम, मूल अपनी क्वॉलिटी बहुत अच्छी हैं! लेकिन यह तो ऐसा है न, फिर कहीं भी घूमते हैं इसलिए फिर संस्कार सारे बिगड़ जाते हैं। बाद में दारू पीने लगते हैं, अन्य करने लगते हैं। यह शोभा नहीं देता हमें।

मुसलमानों ने भी इसे समझा है, तो हम नहीं समझ सकते?

**प्रश्नकर्ता :** वे कैसे समझे, दादा? ये मुसलमान कैसे समझे यह चीज़?

**दादाश्री :** उनके उन ओलियाओं ने, उन्होंने खोज़बीन की थी यह। वह व्यक्ति उसके बाद पागल हो जाता है। मुसलमान इतने अधिक दारू के विरोधी हैं कि असली मुसलमान यहाँ पर दारू की एक बूँद गिरी हो तो इतनी चमड़ी जला देता है। कुछ होगा तभी न?

## अध्यात्म मार्ग पर जाने वाले के ऐसे लफड़े नहीं होते

दारू, माँसाहार को कभी भी मत छूना। इसे साइन्टिफिक तौर पर देखें तो नुकसान बहुत ही भयंकर है।

**प्रश्नकर्ता :** यह कैसे साइन्टिफिक है?

**दादाश्री :** वापस इसका तरीका ढूँढते हो? यों तो चार पैर आने की तैयारी हो रही है और वापस तरीका ढूँढते हो?

**प्रश्नकर्ता :** यह समझाइए तो थोड़ा अधिक समझ में आए।

**दादाश्री :** कितना समझाएँ इसे? असार है। एक तो निरे कितने जीव मर जाते हैं इससे, दूसरा, खुद को मूर्छा आती है। दारू-वाइन बनाते समय बहुत जीवजंतु मर जाते हैं। बनाते समय फर्मेन्टेशन में जो जीव उत्पन्न होते हैं न, बहुत मर जाते हैं वे। दारू तो चलते-फिरते त्रस जीवों का भरपूर रस है! निरे जीवों का ही रस है! दारू के एक परमाणु में इतने अधिक जंतु हैं कि ज्ञानी को भी वह अज्ञानी कर दे। इसमें बहुत अधिक जंतु होते हैं। वह (दारू) धर्म को बरबाद कर देती है।

**प्रश्नकर्ता :** हर एक चीज़ से नुकसान तो है ही, लेकिन कम-ज़्यादा है।

**दादाश्री :** हर एक में नुकसान भी होता है और फिर फायदा भी होता है। हमेशा सिर्फ नुकसान नहीं होता हर एक चीज़ में। लेकिन इसमें तो आध्यात्मिक नुकसान है, इसलिए हम मना करते हैं। भौतिक में तो फायदा हो रहा हो, फिर भी हमें ज़रूरत नहीं हैं, अध्यात्म के रास्ते पर हमें चलना चाहिए। हम इन्डियन्स हैं, इसलिए अपना अध्यात्म मार्ग होना चाहिए और शांतिमय मार्ग होना चाहिए। अशांति हम सहन नहीं कर सकते और इस अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले को ऐसे लफड़े होते ही नहीं। एक यह माँसाहार और दारू, दोनों बंद हों न, तो बहुत हो गया। ये भगवान के नियम के बाहर की चीज़ें हैं।

## दारू तो नहीं ही लेकिन वाइन भी नहीं पी सकते

**प्रश्नकर्ता :** हम दारू नहीं पीते लेकिन यह वाइन पीएँ तो नहीं चलेगा?

**दादाश्री :** कुछ भी नहीं चलेगा।

**प्रश्नकर्ता :** तो वाइन में क्या नुकसान है? वह तो अपने द्राक्षासव (अंगूर के रस) जैसा होता है।

**दादाश्री :** एपल ज्युस पीओ।

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है। लेकिन आपने कल बात की थी न, कि वाइन पीने में भी बहुत अंदर सूक्ष्म जीवों की हिंसा होती है। तो हम ये गेहुँ खाते हैं, तो उसे जो बोते हैं, तब उसमें भी जमीन में कितने अधिक जीवजंतु होते हैं! दवाईयाँ डालनी पड़ती हैं, कितनी हिंसा होती है!

**दादाश्री :** उसमें तो लेकिन चारा ही नहीं है न! यह तो भोजन के बगैर चलेगा कैसे? भोजन तो चाहिए ही न? यह मजबूरन करना पड़ता है, अनिवार्य रूप से करना पड़ता है और यह तो लोग शौक के लिए करते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यह वाइन कभी-कभार ही, कोई ऐसा अवसर आए तब थोड़ी ही लें तो उसमें क्या गलत है?

**दादाश्री :** साल में कितनी बार चोरी करते हो आप? किसी की जेब में से पैसे कितने दिन निकालते हो?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, ऐसा कभी भी नहीं, किसी की जेब में से।

**दादाश्री :** लेकिन ऐसा एकाध दिन निकालो तो इसमें क्या गलत है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, यह गलत कहलाता है।

## बियर से बाड़ टूटे तो दारू तक पहुँच जाए

**प्रश्नकर्ता :** मैं तो बियर पीता हूँ, वाइन-ब्रांडी नहीं पीता, बियर कभी-कभार पीता हूँ।

**दादाश्री :** ओहोहो! इससे क्या फायदा होता है? इससे शक्ति बढ़ती है? तो क्या फायदा होता है? इसके बजाय पानी पीएँ तो क्या गलत है? अन्य कई चीज़ें पीने जैसी हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, बियर पीते हैं, वह तो इन्डिया में लोग इकट्ठा होकर पान खाते हैं उसके जैसा है। यह पान से ज़्यादा हेल्धी है। इन्डिया में जैसे पान खाते हैं, उसी प्रकार यहाँ पर बियर पीना है। तो दादा, बियर में ज़ोखिम क्या है?

**दादाश्री :** लेकिन फायदा क्या है इसमें? ज़रूरत क्या है? दारू में ज़्यादा मूर्छा होती है और बियर में कम होती है। बियर में यों धून (मस्ती) रहती है, ऐसा रहा करता है उसे। बियर पीने से बाड़ टूट जाती है। बाड़ टूट जाती है इसलिए फिर वह भी (ब्रांडी भी) कभी-कभी पी लेते हैं। यानी बाड़ तोड़ना नहीं चाहिए। और वह ब्रांडी भी पीना, यदि एक्सटेन्शन मिले तो! दो सौ-तीन सौ साल का एक्सटेन्शन मिले तो ऐसा भी पीना। लेकिन जब चले जाना है, एक्सटेन्शन न मिलता हो तो किसलिए ऐसा करना है?

## निराग्रही रूप से सचेत करें, कहाँ है सेफसाइड

सार-असार का विवेक करना कुछ। विवेक होता है या नहीं होता? क्या खाना चाहिए, क्या नहीं खाना चाहिए? मनुष्य में विवेक होता है या नहीं होता? क्या खाना है और क्या नहीं खाना, क्या पीना है और क्या नहीं पीना, उसे विवेक कहते हैं। विवेक नहीं होता, उसे मनुष्य ही नहीं कह सकते न! सार-असार का विवेक, सार और असार। नहीं चाहिए विवेक? क्या कहते हो?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, हाँ चाहिए।

**दादाश्री :** हाँ, तो विवेक में नहीं आता यह। पीना हो तो हमें हर्ज़ नहीं है। हम सलाह देकर छूट जाते हैं। मैं कोई आपको डाटूँगा या ज़दरजस्ती नहीं करूँगा। इससे दूर रहने जैसा है, यदि सुखी होना है तो वर्ना हम आपको कुछ मना नहीं करते, कि मत पीना या पीना, ऐसा हम आपसे कहना नहीं चाहते। हम आपसे इतना ही कहते हैं, कि इसमें सेफसाइड क्या है और फायदा क्या है, यह आपको बताते हैं। आपको समझ में आता है न? जो आपको ठीक लगे वह करना, मुझे उसमें हर्ज़ नहीं है लेकिन आपको समझाने के लिए कहता हूँ। अभी भी सचेत होना है तो सचेत हो जाना। ज्ञानी पुरुष के कहने से सचेत हो जाओगे तो अच्छा है। नहीं सचेत हुए तो, हमें आपसे कोई जबरदस्ती नहीं करनी होती है। मैं आपको बोतल पीने से मना करता हूँ क्योंकि यह तो नासमझ लोगों का काम है। समझ वाले को व्यसन नहीं होता।

## [ 3.3 ] व्यसनी का संग वह बड़ा ज़ोखिम

## जूठ बोलकर भी दारू के शिकंजे में से छूट जाना

**प्रश्नकर्ता :** दूसरा यह पूछना है, हम किसी पार्टी में गए हों यहाँ पर अमरिका की और कभी-कभार आग्रह से हमें कहें, कि यह व्हिस्की पीओ, व्हिस्की पीओ, उस समय क्या करें?

**दादाश्री :** नहीं...

**प्रश्नकर्ता :** अब, यदि मना करें और वह चार बार कहता हो, तब फिर हम यह गलत कर रहे हैं ऐसा होता है न फिर? आग्रह में पड़े।

**दादाश्री :** नहीं, नहीं, नहीं। वहाँ पर एक ही बात कहना, कि 'मेरे शरीर को बहुत नुकसान करती है, इसलिए इसकी डॉक्टर ने खास मनाई की है।' ऐसा कह दिया तो छूट जाएँगे।

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा के लिए जूठ बोलें?

**दादाश्री :** आत्मा के लिए जूठ बोलने में कोई हर्ज़ नहीं है। ऐसा मत कहना, 'मैं धर्मिष्ठ व्यक्ति हूँ।' उनसे ऐसा कहना, 'मेरे शरीर को माफिक नहीं आता। डॉक्टर ने मना किया है, कि ज़रा सी बूँद भी मत लेना। अब आपका शरीर सहन कर सके ऐसा नहीं है।' इसलिए वह 'यस' कह देगा। चाहे कोई भी रास्ता ढूँढ निकालो। आप ऐसे शिकंजे में आ जाए तो छूट जाना किसी भी रास्ते से। जिसे खुद को नहीं पीनी है, उसे सारे रास्ते मिल जाते हैं। लेकिन पीनी हो उसे नहीं मिलते। खुद की इच्छा पोल वाली हो, तब भीतर उसे रास्ता नहीं मिलता।

## व्यसन रूपी अग्नि के पास जाना ही नहीं

मित्र ऐसे मिले हैं?

**प्रश्नकर्ता :** कॉलेज़ में ऐसे थोड़े मित्र हैं, जो पीते हैं।

**दादाश्री :** वे पीते हैं तब तुझे मन में ऐसा नहीं हुआ, कि लाओ, मैं भी टेस्ट करता हूँ?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, मुझे अभी तक नहीं हुआ?

**दादाश्री :** और होगा तब क्या करेगा?

**प्रश्नकर्ता :** तब मैं रोकने का प्रयत्न करूँगा।

**दादाश्री :** अग्नि के पास न जाना अच्छा है या अग्नि के पास जाकर फिर खुद को रोकने का प्रयत्न करें वह अच्छा है?

**प्रश्नकर्ता :** रोकने के लिए प्रयत्न करना अच्छा।

**दादाश्री :** नहीं, अग्नि के पास जाना ही नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** फिर फ्रेन्डस चले जाएँगे।

**दादाश्री :** नहीं, नहीं, फ्रेन्डशिप टेस्टेड चाहिए। अन्टेस्टेड

फ्रेन्डशिप का करना क्या है? वे वास्तविक अड़चन के टाइम पर आकर खड़े रहें, ऐसी फ्रेन्डशिप चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** दो-चार फ्रेन्ड्स हैं मेरे, उन्हें ड्रिंकिंग छोड़ना है लेकिन छूटता नहीं, दादा। उन्हें कैसे छुड़वा सकते हैं?

**दादाश्री :** छुड़ाने की बात मत कर, तू बंध न जाए वह देखना, छुड़ाने जाते समय। छुड़ाने गए थे वे अधिक बंध गए थे। इन लोगों के तो संक्रमण में भी नहीं आना चाहिए, दूर रहना चाहिए। वर्ना एक दिन सभी इकट्ठे होकर, संगति करके पिला देंगे, पकड़कर।

## 'व्यसनी से दूर रहना' ऐसा अपने ज्ञान में रहना चाहिए

कुसंग वाले होते हैं न व्यक्ति, उन बच्चों के साथ फ्रेन्डशिप ही नहीं करनी चाहिए। वर्ना कुसंग तो चढ़े बगैर रहता ही नहीं। उसका स्वभाव है, कुसंग चढ़ ही जाता है। अच्छे संस्कार चढ़ने में देर लगती है।

**प्रश्नकर्ता :** यह बात सही है दादा, लेकिन बचपन से अच्छे मित्र हों, फिर भी बीड़ी या ऐसा कोई व्यसन करते हों, तो उसमें क्या करें?

**दादाश्री :** हो सके इतना दूर रहो। फिर भी दूर रहना वह अपने हाथ की बात नहीं। ऐसा आपका हाथ में अधिकार नहीं है, कि आप ऐसा कर ही सकोगे लेकिन ज्ञान क्या जानना चाहिए? कि व्यसनी से दूर रहो। फिर कुदरत हमें साथ-साथ भटकाए इट्स ए डिफरन्ट मेटर (वह अलग बात है)। लेकिन आपके ज्ञान में यह रहना चाहिए, कि व्यसनी से दूर रहो।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ जी। पर मान लो कि साथ में रहने का संयोग हो तो व्यसन से मुक्त कैसे रहें?

**दादाश्री :** व्यसन से मुक्त रहने के लिए 'व्यसन वह गलत

चीज है', ऐसी आपको प्रतीति हो जानी चाहिए। यह प्रतीति हटनी नहीं चाहिए। आपका निश्चय नहीं हटना चाहिए। फिर व्यसन से दूर ही रहता है, वह व्यक्ति। लेकिन 'इसमें कोई हर्ज़ नहीं है', ऐसा कहा कि घुस गया।

## [ 4 ] व्यसनों से छूट सकते हैं?

### खुद निश्चय करें तो छूट सकते हैं

**प्रश्नकर्ता :** कई लोग इस दारू की लत में पड़े हैं, वे लोग ऐसा कहते हैं कि, 'हम छोड़ना चाहते हैं फिर भी हमसे नहीं छूटती'।

**दादाश्री :** बहुत काल (समय) हो जाता है न, उसके बाद नहीं छूटती यह। फिर भी जिसे छोड़ना है न, उसका निश्चय अभी भी किसी न किसी दिन काम करता है। खुद निश्चय करे तो हो सकता है, बाकी छूट नहीं सकते। अब अन्य मार्ग नहीं रहा।

**प्रश्नकर्ता :** खुद निश्चय करे तो हो सकता है लेकिन इस जन्म में निश्चय करें तो अगले जन्म में होगा न? इस जन्म में तो पिछले जन्म का चला आ रहा है न सब?

**दादाश्री :** बिल्कुल। लेकिन यह निश्चय हो जाए न, तो वह निश्चय पिछले जन्म के आधार पर ज़्यादा मज़बूत होता है इसलिए इस जन्म में भी उसे हेल्प मिलती रहती है और अगले जन्म में बहुत बड़ी हेल्प मिलेगी।

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है।

**दादाश्री :** अब, यह गाड़ी चलानी है, इसमें यह स्टीयरिंग यानी निश्चय। यह स्टीयरिंग वह भी निश्चय है एक तरह का। रोड़ से बाहर नहीं निकलनी चाहिए, ऐसा निश्चय और जिसका निश्चय नहीं रह पाता है न, उसे तो प्रतिज्ञा का पालन करना पड़ता है। प्रतिज्ञा लेनी पड़ती है। अब, प्रतिज्ञा हमारे पास से लें तो काम की।

## हार्टिली पश्चाताप और कोई सुधारने वाला होना चाहिए

दूसरा, अब यह चीज़ कैसे जाएगी? तब कहते हैं, एक व्यक्ति पी रहा है तो उस पर बहुत चिढ़ रखते हैं, 'यह दारू नहीं पीना चाहिए, नहीं पीना चाहिए, यह दारू पीकर देखो न, इसकी यह दशा हुई है।' ऐसा करते-करते खुद फिर नहीं पी सकेगा। खुद की मूल ग्रंथि खत्म हो जाती है।

**प्रश्नकर्ता :** यदि कोई पी रहा है तो 'यह खराब है', ऐसा कहने से अपना छूट जाता है।

**दादाश्री :** खुद की गाँठ टूट जाती है, ऐसा करते-करते।

**प्रश्नकर्ता :** मान लो कि बीड़ी पीना वह खराब है, माँसाहारी होना वह खराब है, ये सभी लोग मानते हैं कि खराब है, इसके बावजूद भी लोग ये करते ही रहते हैं, इन कर्मों को जानने के बावजूद भी करते जाते हैं।

**दादाश्री :** ये सभी बोलते हैं, वे ऊपर-ऊपर से बोलते हैं, सुपरफ्लुअस बोलते हैं। कैसा? हार्टिली नहीं बोलते। यदि हार्टिली बोलें, तब तो कुछ टाइम में इसे गए बगैर चारा ही नहीं है। हार्टिली है तो इसे जाना ही पड़ेगा। आपके जो दोष हों, बहुत ही खराब दोष हों, लेकिन आप बहुत पश्चाताप करें, फिर भी हो जाते हैं दूसरे दिन। तो हो जाएँ उसमें हर्ज़ नहीं है, लेकिन बहुत पश्चाताप करते रहो।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, यानी व्यक्ति सुधर सके ऐसी संभावना है?

**दादाश्री :** बहुत संभावना है, लेकिन सुधारने वाला होना चाहिए।

## शब्दज्ञान से नहीं, समझ में आ जाए ऐसे ज्ञान से छूट सकते हैं

**प्रश्नकर्ता :** ऐसी सारी बातें प्रवचनकार से सुनते हैं, तब सब अच्छा लगता है, लेकिन फिर थोड़े समय बाद सब चला जाता है।

**दादाश्री :** वह सब (बात) गलत है। जो सुनते हैं न, तब अच्छा लगता है और थोड़े समय बाद चला जाए तो, इसका तो अर्थ ही नहीं है न! इसे तो फिल्म कहते हैं। देखते हैं उस समय दिखाई देता है और फिर चला जाता है, इसे तो फिल्म कहते हैं। इसलिए मैं टिक पाए, ऐसा दूँगा! कई लोगों के दारू और माँसाहार सब छूट गए हैं, अपने आप हमारे शब्द से ही! हमारे शब्द से पूरे बदल जाते हैं लोग! यह वचनबल इतना अधिक अच्छा है कि पूरे, सभी बदल जाते हैं! ये लोग तो जो यहाँ पर उपदेश देने आते हैं न सभी, वे दो-पाँच दिन उपदेश एकांत में देकर चले जाते हैं, वे लोग। अब 'ज्ञान' शब्द से नहीं चलता। 'बीड़ी मत पीओ, अन्य व्यसन मत करना।' ऐसा बोलने से नहीं चलता, इसे ज्ञान नहीं कहते। ज्ञान तो उसकी समझ में, स्पष्ट समझ में आ जाना चाहिए।

अब, जानना और करना (क्रिया), एक कब होते हैं? शुष्क ज्ञान न हो और सत् ज्ञान हो, तब होते हैं। यानी सच्चा ज्ञान होता है तो ज्ञान और (क्रिया) करना, दोनों साथ में ही होते हैं। सच्चा ज्ञान! यानी सच्चा ज्ञान ही प्राप्त नहीं हुआ। वर्ना अपने अनुसार सब होता ही रहता है। अपने यहाँ तो ज्ञान और ये दोनों ही साथ में ही होते हैं। यानी चुस्त ज्ञान चाहिए। कैसा? ऐसा शुष्क ज्ञान नहीं चाहिए। शुष्क ज्ञान यानी क्या? देखो न, ज्ञान तो सिगरेट के पैकेट पर लिखा ही है न, कुछ?

**प्रश्नकर्ता :** लिखा है।

**दादाश्री :** ज्ञान सरकार ने प्रकाशित किया है। सिगरेट के पैकेट पर लिखो, कहते हैं। अपने लोग भी पैकेट पर पढ़कर भी पीते रहते हैं। यानी ज्ञान इस तरह से देना चाहिए, कि उनके मन में तय हो जाए कि अब नहीं छुऊँगा। यह सारा शुष्क ज्ञान जाना है।

## ज्ञानी के चारित्रबल से सहज छूटे व्यसन

**प्रश्नकर्ता :** मैंने ऐसा सुना था, कि आप अमरिका गए थे वहाँ

पर कई लोगों को व्यसन में से, आदतों में से मुक्त किया था। वे कैसे (मुक्त) हुए? यह आप कैसे करवाते हैं? क्या उपदेश देते हैं?

**दादाश्री :** मेरा चारित्रबल है! क्योंकि जितना उनका शील, चारित्र, उतना बल! कम्प्लीट मोरेलिटी, कम्प्लीट सिन्सियरिटी उसे चारित्र कहते हैं! कम्प्लीट मोरेलिटी, सेन्ट भी कम नहीं, सेन्ट सिन्सियरिटी कम नहीं, उसे चारित्र कहते हैं! ऐसा चारित्र हो वहाँ पर सब कुछ कहे अनुसार चलता है।

# [ 5 ] व्यसनों से छूटने के प्राथमिक उपाय

## [ 5.1 ] दारू के व्यसन से छूटने के उपाय

### बड़े व्यसन में से छोटे व्यसन पर आ जाना

**प्रश्नकर्ता :** दादा, मैं सिगरेट बहुत पीता हूँ।

**दादाश्री :** और क्या पीता है?

**प्रश्नकर्ता :** कभी-कभार दारू पीता हूँ।

**दादाश्री :** और सिगरेट?

**प्रश्नकर्ता :** सिगरेट ज़्यादा पीता हूँ।

**दादाश्री :** ये तो कभी-कभार करते-करते सिगरेट घुस गई है। इसलिए छूना ही मत इसे। दारू और सिगरेट तो दोनों छूने जैसी चीज़ नहीं हैं। उसके बाजवूद ये सिगरेट और ये सब तो ठीक हैं, लेकिन यह दारू नहीं होनी चाहिए। एक सिर्फ दारू का संग नहीं करना चाहिए। संग हो गया हो तो फ्रेन्डशिप छोड़ देनी चाहिए। आप उसके बजाय अन्य कोई संगत करो। दूसरा कुछ न हो तो पान शुरु कर दो। सुपारी भी केफ चढ़ जाए, ऐसी आती है। खाने के बाद भीतर ऐसा लगाता है कि दिमाग तर रहता है, ऐसी सुपारी आती है। ऐसा करोगे तो हर्ज़ नहीं और यह सिगरेट भी खराब नहीं है। मन थोड़ा बहुत

उलझ गया हो न, तो मन बहलाने के लिए एकाद पी लो। फिर जब ये उलझना बंद हो जाए तो फिर हो गया। अन्य सब व्यसन इतने अधिक खराब नहीं हैं, लेकिन हर एक व्यसन गलत तो है ही। उसके बावजूद बड़े व्यसन के बजाय छोटा व्यसन रखना अच्छा है। बड़ा व्यसन खत्म हो गया हो तो छोटे व्यसन पर आ जाओ और मन को कह दो, कि भाई ले, यह लेना, ऐसा कहना। लेकिन यह दारू और ये सब नहीं चाहिए। ये तो मेडनेस (पागलपन) है जो आत्मा को मूर्च्छित बना दे, ऐसी दवाई तो हमें शोभा नहीं देती न!

सिगरेट मूर्च्छित नहीं बनाती लेकिन इन्टॉक्सिकेशन करती है। मन को चंचल बनाती है परंतु शरीर के लिए बहुत नुकसानदेह है। ये चाय भी मन को चंचल करती है। मूर्च्छित नहीं करती, लेकिन मन को चंचल करती है। यह अच्छी नहीं है और दूसरा क्या है, हमें वह परवश रखती हैं। चाय भी बहुत परवश करती है लेकिन इससे भान नहीं चला जाता। चाय से क्या भान चला जाता होगा? और दारू तो एक दिन ज़्यादा चढ़ गई तो? अरे! लोग घर में बैठाकर हस्ताक्षर करवा लेते हैं यों! दारू पीलाते जाते हैं और हस्ताक्षर करवा लेते हैं। वह सभी जगह कर भी देता है। जबकि इन हुक्के, बीड़ी वालों का भान नहीं चला जाता।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसे ही, ये तम्बाकू खाते हैं, सिगरेट पीते हैं तो उसका असर ऐसा होता है क्या?

**दादाश्री :** इस सिगरेट का असर दूसरी तरह से होता है। इसमें इस तरह से शक्तियाँ खत्म नहीं हो जाती, लेकिन इसमें तो भीतर अंदर यहाँ पर है तो केन्सर होता है, दूसरा होता है, तीसरा होता है। अपने कॉज़ीज़ रखकर ही जाती है। और सिगरेट भी तो जितना आप उसका जो इन्टॉक्सिकेशन लेते हैं, उतना तो नुकसान करती ही है।

**प्रश्नकर्ता :** केन्सर होता है तो केन्सल हो जाते हैं न?

**दादाश्री :** हाँ, यह तो ज़ोखिमदारी है ही, लेकिन इसकी (दारू की) तो ज़ोखिमदारी बहुत बड़ी है। रोज़ का केन्सर है यह तो, हर रोज़ का केन्सर। भान ही खो देते हैं न!

अपने यहाँ तो और बहुत कुछ पीने के लिए है, ओहोहोहो! इतनी अधिक चीज़ें हैं! कितने तरह के रस हैं और चाय और सभी धमाल कितनी ज़्यादा हैं, नहीं? बहुत कुछ पीने को है। यदि सोडा पी ले तो क्या हर्ज़ है? अरे, विम्टो (सोफट ड्रिंक) आता है न, वह भी पीओ तो क्या हर्ज़ है? ये पेप्सी-वेप्सी पीओ और बहुत तरह के रस हैं! कितना ज़्यादा अच्छा है! और दूध में बादाम डालकर पीओ, आराम से। यहाँ मौका मिला है, बादाम सस्ती है, सब सस्ता है। ये तो पीते नहीं और वह (दारू) ढूँढ निकाला है। लोग जो है, उस सुख को भोगते नहीं और नहीं हों ऐसे सुख को ढूँढते हैं।

## आत्मज्ञान ले लें, यह छूटने का आसान उपाय

**प्रश्नकर्ता :** दारू के व्यसन से छूटने का आसान उपाय क्या है?

**दादाश्री :** मुझे अमरिका में एक व्यक्ति मिला था। वह व्यक्ति तो एक गैलन दारू पीता था, हर रोज़ एक गैलन! उसको यह ज्ञान दिया तो बंद हो गया एकदम से! ज्ञान दिया और एकदम बंद। 'इन दादा ने मुझ पर क्या किया कि यह पूरा गैलन दारू छूट गया', कहता है। यह 'अक्रम विज्ञान' है! हमने इन सभी को ज्ञान दिया, इसके बाद कई लोगों का बंद हो गया। पाप कर्म ही नाश हो गया उनका। मुझे तो कई सारे लोग दारू पीने वाले मिले, फिर मुझसे मिलने के बाद दारू छूट गई थी सभी की।

**प्रश्नकर्ता :** छूट सकती है ऐसे? ज्ञानी मिलने के बाद छूट सकती है?

**दादाश्री :** हाँ, सब कुछ छूट जाता है। ज्ञानी मिलने के बाद

क्या नहीं छूट सकता, इस दुनिया में! जबकि मैं आपको सारा सुख देने के लिए तैयार हूँ। हमेशा के लिए दुःख ही उत्पन्न न हो, ऐसा दूँगा तो आप छोड़ोगे या नहीं छोड़ोगे? यह सारा हमेशा का सुख दे देता हूँ। लेकिन ज़रा दो-तीन महीने छोड़ दो न, पंद्रह दिन, महीना, यह भूमिका तैयार हो जाए इसलिए छोड़ दो।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, छोड़ दूँगा। यह तो छोड़ सकता हूँ।

**दादाश्री :** हाँ, आप पंद्रह दिन छोड़ दो न! फिर यदि आपको ऐसा लगे कि दादाजी, आपको दिया (यह छोड़ दिया) लेकिन संतोषजनक न लगे, तो फिर से पीना। आपको कहाँ नुकसान होगा? इन एग्रीमेन्ट से मैं थोड़े ही आपको बाँधता हूँ? पर पंद्रह दिन तो छोड़ दो।

कई बनिए बोलते हैं, कि 'दादा, थोड़ी-थोड़ी लेते हैं'। मैंने कहा, 'अरे, यह शोभा नहीं देता।'

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन लगभग तो सभी ने ही छोड़ दिया है, दादा। यह ज्ञान मिलने से ऑटोमेटिक छूट जाता है।

**दादाश्री :** हाँ, अब, छोड़ देते हैं। मीट (मांस) और दारू दोनों ही छोड़ देते हैं। कई लोगों ने छोड़ दिया है। मुझे प्रोमिस दिया है, अब दादा नहीं पीऊँगा। दुःख की वजह से ही इसमें पड़ते हैं, भीतर शांति नहीं रहती इसलिए। अब दादा याद रहेंगे तो भी कितना अच्छा है! 'दादा' बोलने के साथ ही शांति हो जाती है। वर्ड 'दादा' रेडिएट्स! क्या होता है?

**प्रश्नकर्ता :** वर्ड 'दादा' रेडिएट्स ('दादा' शब्द ही काम करता है)।

## छूट जाने के बाद भी 'अच्छी है' ऐसा नहीं बोलना चाहिए

**प्रश्नकर्ता :** यह दारू पीने से जो सब डेमेज़ (नुकसान) हुआ

हो दिमाग को, दिमाग के परमाणुओं का जो डेमेज़ हो चुका हो, वह डेमेज फिर से रिबिल्ट कैसे होगा ?

**दादाश्री :** कोई रास्ता ही नहीं है इसका। वह तो टाइम ही बीतता जाएगा वैसे-वैसे यह होता जाएगा। पीए बगैर टाइम जाएगा न, बीतता जाएगा, वैसे-वैसे वे सब खुलते जाएँगे। एकदम नहीं होगा। पीना बंद कर दिया है न? अब, इसका क्या करना है, कि 'दारू पीना वह खराब है', ऐसा हमेशा बोलना है।

**प्रश्नकर्ता :** अच्छा, बंद करने के बाद भी बोलना है ?

**दादाश्री :** बाद में भी बोलना है। 'अच्छी है' ऐसा कभी भी मत बोलना वर्ना उसका असर फिर से होगा। 'अच्छी चीज़ है' ऐसा कभी भी मत मानना।

## [ 5.2 ] अन्य व्यसनों में से छूटने के उपाय

### व्यसन छोड़ने के लिए शक्ति माँगें और भावना बदलें

**प्रश्नकर्ता :** सिगरेट छोड़ने के लिए क्या करें ?

**दादाश्री :** सिगरेट पी, यह पूर्व जन्म के आधार पर है, लेकिन आपको मन में भाव करना चाहिए कि यह नहीं पीनी चाहिए। सिगरेट पी ली, यह पूर्व जन्म के आधार पर। आपको नहीं पीनी हो, फिर भी संयोग ऐसे मिल जाते हैं कि पी लेते हो। इसलिए आपको भाव करना चाहिए, कि यह नहीं पीनी चाहिए, तो अगला जन्म पीए बगैर का होगा। पूर्व जन्म में भावना की है, इसलिए ये पी लेते हैं, लेकिन अब फिर नये सिरे से भावना बदलो तो बदल सके ऐसा है। कैसा है ? छोड़ने के लिए आप भावना कर सकते हैं। छोड़ पाएँगे या नहीं छोड़ पाएँगे, वह अलग चीज़ है। आज भावना करोगे तो आगे जाकर उसका फल आएगा। अब, बोलते रहना, कि 'दादा भगवान, मुझे सिगरेट छोड़ने की शक्ति दीजिए', ऐसा बोलते रहना।

## 'असीम जय जयकार' का उपाय

**प्रश्नकर्ता :** दूसरा कोई रास्ता दिखाइए।

**दादाश्री :** 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' बोलना शुरू करो एक बार। फिर धीरे-धीरे मन मज़बूत होगा। बाद में हम विधि करेंगे। तुझे यह 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' बोलना पसंद आएगा?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दादा अवश्य पसंद आएगा।

**दादाश्री :** चाहे कहीं भी, तुझे रूम में बैठे-बैठे थोड़ी देर बोलना है। आठ मिनट से कम नहीं। इससे ज़्यादा बोल पाए तो अच्छा है। टाइम मिले तो अच्छा है, वर्ना आठ मिनट तो बोलना ही है। यह सब तुझे हेल्प करेगा। अंदर विटामिन है यह।

## आधार देने वाले और आधार खींचने वाले हम ही

आप सिगरेट-विगरेट पीते हो क्या? सिगरेट-चाय नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** सही है। सिगरेट कम, लेकिन चाय पीता हूँ। चाय का तो व्यसन है और बहुत बढ़ गया है। चाय तो पीना पसंद है। पसंद है वहाँ पर क्या करें, दादा?

**दादाश्री :** हाँ, वह पसंद तो आती है लेकिन जब अच्छी न लगे, ऐसी बनी हो न, तब मन में ऐसा होता है कि अरे, इस चाय में कोई दम नहीं है, पी ही नहीं होती तो अच्छा था। उसके बाद अभिप्राय बदलता जाता है। अभिप्राय बदलते-बदलते शून्य हो जाता है। यह तो अभिप्राय से ही खड़ा है सब। हम ही आधार देने वाले और आधार खींचने वाले भी हम। इसके बावजूद भी इस पर बहुत प्रयोग नहीं करने चाहिए। ऐसे ये रोज़ की ज़रूरत की चीज़ें हैं न, उन पर प्रयोग नहीं करना। क्योंकि ये बहुत नुकसानदायक नहीं हैं न! अन्य कई सारे प्रयोग बाकी हैं। चाय तो ज़रा ठीक है, मन को ज़रा

मोज़ कराती है। थोड़ी देर सुबह के पहर में और दोपहर में मोज़ कराती है। 'अच्छी' कहा कि चिपक जाती है। 'बुरी' कहा कि भाग जाती है।

**प्रश्नकर्ता :** 'बुरी है', ऐसा कहना चाहिए।

**दादाश्री :** बुरी है ऐसा नहीं, 'मुझे पसंद नहीं है' ऐसा बोलें न तो नापसंद हो जाती बाद में लेकिन 'मुझे पसंद नहीं है', ऐसा यदि रोज़ कहेंगे तब तो फिर यह चाय छूट जाएगी। ऐसा है न, सब छोड़कर क्या करना है? यह कोई अधिक नुकसानदायक नहीं है लेकिन उन बुरी आदतों में मत पड़ना। सिगरेट है, दारू है, उन बुरी आदतों में मत पड़ना। जिसे हैं तो धीरे-धीरे बंद कर देना। बाकी चाय जैसी चीज़ रखना क्योंकि संसार में रहना है न, इन्टॉक्सिकेशन चाहिए थोड़ा। यानी यह रहे और अन्य खराब चीज़ें निकाल देनी हैं।

## [ 6 ] व्यसनों से छूटने का 'चार स्टेप' का अनोखा रास्ता

### स्टेप 1 : 'गलत है' यह ज्ञान हाज़िर रखना

### न छूटे फिर भी, 'गलत है' ऐसा ज्ञान निरंतर रहना चाहिए

**प्रश्नकर्ता :** मुझे सिगरेट पीने की खराब आदत है, यह सिगरेट मेरी छूट जाती है और फिर वापस आ जाती है, तो हमेशा के लिए छूट जाए, ऐसा कोई सुव्यवस्थित उपाय बताइए न!

**दादाश्री :** यह इसके लिए तू ऐसा रखना, कि यह गलत है, खराब चीज़ है, तो छूट जाएगी।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ। दादा, मुझे ज्ञान है, कि यह मैं कर रहा हूँ वह गलत कर रहा हूँ, मुझे पसंद भी नहीं होता, लेकिन उसके बावजूद यह छूटता नहीं है, तो क्या करें?

**दादाश्री :** छूट नहीं पाते, उसका सवाल नहीं है। हमेशा 'यह

चीज़ गलत है', वह मानते रहना और वह न छूटे तो मन में 'यह गलत है' ऐसा ख्याल निरंतर रहना चाहिए। यह गलत है, वह ज्ञान निरंतर, एक क्षण भी जाना नहीं चाहिए। तो यह ज्ञान समझो, कि 'यह गलत है', तभी से ये गाँठें टूटती जाएगी। 'यह मेरे लिए अहितकारी है' ऐसा उसे समझ में आए, ऐसा ज्ञान उसे प्राप्त हो जाए तो। सिर्फ ज्ञान ही प्रकाश है इस जगत् में। ऐसा ज्ञान उसे प्राप्त हो जाए, तो वह भेद सकता है।

## स्टेप 2: कैसे 'गलत है' उसकी समझ इकट्ठा करो

## पहले समझ में छूटे फिर काल अनुसार एक्ज़ेक्ट छूटे

**प्रश्नकर्ता :** यह सिगरेट का व्यसन गलत है, ऐसा निरंतर समझ में रहा ही करे तो क्या छूट जाएगी?

**दादाश्री :** यह समझ से छूट तो जाएगी। समझ से छूट जाना यानी क्या? समझ से समझ में छूट जाना। एक्ज़ेक्ट (वर्तन से) छूट नहीं गई है यह। फिर एक्ज़ेक्ट छूटने में देर लगती है, टाइम लगता है। पहले समझ से समझ में छूट जाना चाहिए, उसके बाद एक्ज़ेक्ट छूटेगा।

**प्रश्नकर्ता :** यानी इसका अर्थ यह हुआ, कि यदि समझ एकदम दृढ़ हो गई, तो अमल में संभावना...

**दादाश्री :** बस, फिर आए बगैर नहीं रहेगा। चारा ही नहीं है। समझ वह एक्चूअल, एक्चूअली हुआ उसे ही अमल कहते हैं। अमल में लाना नहीं पड़ता, अमल में आ ही जाता है! दो बोतलें पड़ी हैं, इतनी-इतनी। दोनों में सफेद पाउडर है; एक में विटामिन है और एक में पोइज़न है। पोइज़न पर पोइज़न लिखा हुआ है, विटामिन पर विटामिन लिखा हुआ है, परंतु दोनों ही सफेद पाउडर हैं। अब, फादर को विटामिन लेते हुए देखा हो, तो बच्चा समझता है कि लाओ, मैं भी यह फादर के साथ चखता हूँ इसे। अब, वह

है तो उसके बदले पोइज़न ले लेता है। ले सकता है या नहीं ले सकता?

**प्रश्नकर्ता :** ले सकता है।

**दादाश्री :** दोनों ही सफेद, समान दिखते हैं, पढ़ना नहीं आता। तब कहते हैं, अब क्या करना चाहिए, इसके पिता को? कि 'भाई, यदि इस शीशी में से लेगा तो तू मर जाएगा' लेकिन 'मर जाएगा' कहने से उसे ज्ञान हो गया, ऐसा नहीं है। कहा यानी हो गया उसे ज्ञान? फिर वह बच्चा पूछता है, 'पप्पा जी, मर जाऊँगा यानी क्या? कौन से गाँव जाऊँगा मैं?' तब कहते हैं, 'वे चाचा अपने थे न, वे मर गए, तो उन्हें अर्थी में बाँधकर ले गए थे।' तब उसे समझ में आता है, कि ऐसे कोई मर गया था, इसलिए फिर यों ले जाते हैं। यानी उसे ज़रा सा समझ में आए न, तब फिर नहीं छूता वह। समझ फिट हो गई उसके बाद वह नहीं छूता। यह समझ फिट नहीं हुई है अभी। फिर समय भी उसका हिसाब माँगता है। जो प्रतीति में आ गया और जो समझ में आ गया, वह वर्तन में अवश्य आएगा, यह निर्विवाद है।

## प्रतीति बैठते ही प्रेम घटे और उसके गुण-दोष दिखें

प्रतीति बैठने के बाद बीड़ी के गुण-दोष आप में प्रकट होते हैं, तब अनुभव होता है। पहले तो प्रेम था तब तक गुण-दोष दिखते ही नहीं थे न! खांसी आई वह इस बीड़ी की वजह से आई ऐसा नहीं, यह तो आती रहती है खांसी तो। इस बीड़ी की वजह से ऐसा होता है, वैसा होता है, ये सब बीड़ी के गुण-दोष हैं, वे दिखते जाते हैं। जब से अपना उसके प्रति प्रेम कम हो जाता है, यानी गुण-दोष दिखाई देने की शुरुआत होती है और जहाँ अपना प्रेम है वहाँ अवगुण, दोष होते हैं फिर भी पता नहीं चलता। आपको जिसके प्रति प्रेम होगा न, उसमें दोष होंगे तो भी नहीं दिखाई देंगे आपको लेकिन जब प्रेम कम हो जाता है, तब वास्तव में दोष दिखाई देते हैं।

## स्टेप 3 : गलत वर्तन के सामने पश्चाताप करो और शक्ति माँगो

### प्रतिक्रमण से अभिप्राय बदले और व्यसन का अंत आए

**प्रश्नकर्ता :** ये चंदूभाई तम्बाकू खाते हैं और साथ में भाव भी करते हैं कि यह गलत है, लेकिन फिर भी वे खा लेते हैं, तो इसके लिए और क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** चंदूभाई खाते हैं उनसे तो प्रतिक्रमण करवाओ क्योंकि इस प्रतिक्रमण का अर्थ यहाँ पर क्या होता है?

**प्रश्नकर्ता :** प्रतिक्रमण यानी मुझसे प्रकृति के कारण कर्म तो हो जाता है, लेकिन उसका मुझे पश्चाताप है, मुझे छोड़ना है, इस तरह का।

**दादाश्री :** हाँ, पश्चाताप हुआ, लेकिन प्रतिक्रमण का अर्थ क्या है? खुद तम्बाकू खाता है, उस अभिप्राय से विरुद्ध चला। अभिप्राय छूट गया उसका। आपका अभिप्राय बदल गया, यानी उसका आयुष्य पूरा होने की तैयारी हो गई। अभिप्राय से यह जीवित रहता है।

एक व्यक्ति बीड़ी या सिगरेट पीता है, तो पहले शुरुआत में तो मज़बूत हो जाती है, उसकी यह आदत और तब तक उसे अच्छा भी लगता है इस बाबत में लेकिन बाद में उकता जाते हैं कि भाई, अब इसे छोड़ देना है। छोड़ देना है, छोड़ देना है, करता है। अब तभी से उसका अभिप्राय बदलता है। अभिप्राय एक होने से उसे वह आदत पड़ गई थी। अब, अभिप्राय तो बदल गया उसका, यानी छूट जाएगी, यह बात तय है। अब, एक्शन नहीं होगा। सिर्फ रिएक्शन बचा है, और वह एक्शन नहीं करेगा इसलिए फिर पूरा हो जाएगा। अभिप्राय बदलने से छूट ही गया है। लोग अभिप्राय नहीं छुड़वाते। मैं अभिप्राय ही बदलवाता हूँ। और मुझे कोई तेरे दूसरे कार्य नहीं बदलने हैं। तेरा अभिप्राय बदलता हूँ।

## पश्चाताप और शक्ति माँगने से करार छूट जाएँ

समझ में आता है न तुझे? समझ में आया या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दादा।

**दादाश्री :** अब, दूसरा जो है, ये नौ कलमें बोलो। एक व्यक्ति को मैंने नौ कलमें लिख दी थीं, काग़ज पर। वह बीड़ी बहुत पीता था। तो बीड़ी की कलम लिख दी थी, दसवीं कलम, बीड़ी की।

**प्रश्नकर्ता :** बीड़ी की!

**दादाश्री :** ये बीड़ी पी, पिलाई, पीने के प्रति अनुमोदना की उसकी क्षमा माँगता हूँ, ऐसा सब लंबा लिखकर दिया था। मैंने कहा, 'अब, रोज़ ये दस कलमें बोलना, उसमें ये दसवीं हैं न, वह रोज़ पच्चीस-पच्चीस, तीस-तीस बार बोलना'। तो दो महीने में छूट गई।

कोई दारू पीता हो न, वह नौ कलमों में दसवीं कलम रखे कि 'यह अभी तक मैंने पी, पिलाई, पीने के प्रति अनुमोदना की उसकी क्षमा माँगता हूँ, अब नहीं पीऊँगा', ऐसा वह रोज़ बोलता रहे न, तो वह छूट जाती है! पीता हो तब भी छूट जाती है! दारू पीता हो, दूसरा कुछ करता हो, उल्टा-सीधा करता हो, फिर भी यह शक्ति माँग-माँग करे और यदि पश्चाताप करे कि अभी तक यह दारू पीया, उसका पश्चाताप करता हूँ। अब नहीं पीने की मुझे शक्ति दीजिए। उसके बावजूद भी पीता है फिर भी शक्ति माँगते रहना। तो इससे करार टूटते जाएँगे, वर्ना *पुद्‌गल* (अहंकार) का स्वभाव पलटी मारने का है। इसलिए यह भावना करनी है।

## स्टेप 4 : *उपराणां* ( पक्ष ) कभी भी मत लेना

### छोड़ना है, फिर भी *उपराणां* ( पक्ष लेने ) से बीस साल का आयुष्य बढ़ाए

**प्रश्नकर्ता :** व्यसन गलत है, वह समझ में होता है, शक्ति

माँगते हैं और लपेटा है उसे भी उकेलते हैं फिर भी नहीं छूटता है तो कहाँ भूल हो रही है, इसके बारे में समझाएँगे?

**दादाश्री :** वह क्या करता है? बीड़ी का आयुष्य बढ़ाता जाता है। छोड़नी तो है बीड़ी, लेकिन आयुष्य बढ़ाता जाता है खुद। एक्सटेन्शन कर देता है, बीस साल बढ़ाता है। कैसे आयुष्य बढ़ता होगा? वह जानता है, कि बीड़ी खराब है। रोज़ कहता भी है, कि बीड़ी कभी भी पीने जैसी नहीं है। यह पीता हूँ, वही गलत है। दस साल तक 'बीड़ी खराब है' ऐसा मानता हो, लेकिन एक दिन कोई व्यक्ति ऐसा कहे कि, 'ऐसा गलत क्यों कर रहे हो?' उस समय आप *उपराणां* (पक्ष लेना) लेते हो, कि 'नहीं, इसमें कोई हर्ज़ नहीं है?' फिर वह बीस साल ज़्यादा जीती है। अभिप्राय बदला फिर भी एक्सटेन्शन देता है। यह 'हर्ज़ नहीं' कहते हैं, इसलिए भीतर यह जो बीड़ी की ग्रंथि है वह जान जाती है, 'कि यह मालिक जो हमें निकालना चाहता है, वह ढीला है' इसलिए इसका आयुष्य बढ़ गया बीस साल तक।

यह आदत तो पिछले जन्म की है, पर यह नया क्या हुआ है? अज्ञानता से क्या नुकसान हुआ? तब कहते हैं, भयंकर नुकसान हुआ। अगले जन्म के लिए हिसाब बाँधता है और इस तरह छूटती ही नहीं वह क्योंकि, रक्षण किया ही होता है। आपको नहीं लगता रक्षण करते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** करते हैं। उसके सपोर्ट में सब दलीलें लाकर रखते हैं, इसलिए फिर इसे प्रोत्साहन मिलता रहता है।

**दादाश्री :** हाँ, इसलिए फिर बीड़ी नहीं छूटती।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, कुछ लोग पीते-पीते ऐसा कहते हैं, कि 'आइ स्मोक आउट माइ मिज़री। मैं अपने दु:खों का धुआँ कर देता हूँ।'

**दादाश्री :** हाँ, धुआँ करके सब उड़ा देते हैं न! अब, वे बीड़ी

का रक्षण करते हैं। क्या करते हैं? बीड़ी का आयुष्य बढ़ाते हैं। अब, इस जगह पर, यहाँ क्या बोलना चाहिए, कि 'भाई, वह मेरी निर्बलता है, इतनी निर्बलता बाकी है, वह मैं निकाल दूँगा अब'। यह सीधे रहकर बोलने में हर्ज़ है? लेकिन सीधा रहता ही नहीं, भाई!

## इज़्ज़त न जाए इसके लिए उपराणां लेते हैं

कोई कहे, 'सिगरेट छोड़ दे न!' तब कहते हैं, 'भाई नहीं, इसमें क्या हर्ज़ है? छोड़ने की ज़रूरत नहीं है।' ये बचाव करते हैं, उसे *उपराणां* कहते हैं। खुद का बचाव करें, उसे *उपराणां* कहते हैं! तू कोई भी *उपराणां* ले लेता है जबकि तुझे तो भीतर से छोड़ देनी है। इन सभी के बीच इज़्ज़त चली जाती है, इसलिए *उपराणां* लेता है। अरे भाई, इज़्ज़त है ही कहाँ, जो यह इज़्ज़त बचाने जाता है तू? कह देनी है अपनी निर्बलता, कि 'भाई, यह निर्बलता तो है ही मुझमें। यह आपने तो आज देखी है लेकिन मुझे तो हमेशा दिखाई देती है'। कमज़ोरी को सशक्तता कौन कहेगा?

**प्रश्नकर्ता :** दादा, मैं तो उल्टा इज़्ज़त बचाने के लिए मैं घर में कह देता हूँ कि बीड़ी नहीं पीता लेकिन संडास में जाकर पी लेता हूँ।

**दादाश्री :** चुपचाप संड़ास में पीनी, उसके बजाय सभी के बीच पीओ, क्योंकि सभी के बीच में पीने वाले की इज़्ज़त तो देखेंगे कि कैसे व्यक्ति हैं! यह इज़्ज़त सभी के बीच में दिखानी है। लोग चंदुभाई की इज़्ज़त देखने आएँ उसके बजाय आप ही दिखा दो इज़्ज़त, कहो कि कुछ बरकत नहीं है और हज़ार व्यक्ति के बीच पब्लिक में तेरी इज़्ज़त खराब कर रहे हो, तब भी कह दो, कि 'भाई, यह मेरी कमज़ोरी है'। जो खुद की कमज़ोरी ज़ाहिर करता है, वह मूल जगह पर पहुँच पाता है। निजी तौर पर तो हर कोई कमज़ोरी ज़ाहिर करता है।

**प्रश्नकर्ता :** आपने एक बार कहा था कि विवेक इस्तेमाल करने

की ज़रूरत है। निर्बलता, निर्बलता करके उसे जस्टिफाई (बचाव) करने की ज़रूरत नहीं है।

**दादाश्री :** हाँ, वह ठीक है। निर्बलता, निर्बलता ऐसा करके बचाव करने की ज़रूरत नहीं है। ऐसा है, कि निर्बलता के लिए आपको ऐसा होना चाहिए, कि मुझे यह निर्बलता नहीं रखनी है। यह निश्चय होना चाहिए।

## सही रास्ता नहीं जानने से पूरा जगत् फँसा है

आप क्या करोगे अब? क्या कहते हो?

**प्रश्नकर्ता :** बस यों ही, दादा। कमज़ोरी को एक्सेप्ट कर लेनी है।

**दादाश्री :** हाँ, एक्सेप्ट करना है। गलत है उसे गलत तो आपको एक्सेप्ट ही करना चाहिए। कह देना चाहिए कि हमारी कमज़ोरी है। ऐसे साफ-क्लियर करोगे न, तो इसका एन्ड आएगा। यानी यह इसका रास्ता है। यह सिर्फ मैं ही ऐसा बोलता हूँ, हाँ। सिर्फ मैं ही यह सही रास्ता दिखाता हूँ। यह रास्ता नहीं जानने से पूरा जगत् फँसा है। मार्ग अलग ही है न! हमने किसी भी चीज़ का *उपराणां* नहीं लिया है और आप *उपराणां* ले रहे हों तो बंद कर देना! एक्सटेन्शन होता है इससे। हर एक संयोग वियोग सहित ही होता है, परंतु ये लोग वियोग को एक्सटेन्शन देते रहते हैं इसलिए यह खड़ा रहा है। तब हम बताते हैं, कि अरे, निकालो न इस रास्ते... वह भी सीधे रास्ते से निकलेगा यह सब।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, यह बात इतनी सूक्ष्म हो रही है कि कहीं भी...

**दादाश्री :** हो नहीं सकती। यह पुस्तक में नहीं होती, अन्य जगह पर नहीं होती। यह तो, यह मेरे ज्ञान में दिखाई देता है सब।

# [ 7 ] फैमिली में किसी को व्यसन है तो...

## घर वालों का प्रेम देखे तो व्यसन में नहीं पड़ता

**प्रश्नकर्ता :** पतिदेव की खराब आदत सुधारने का रास्ता बताइए।

**दादाश्री :** पतिदेव की खराब आदत सुधारने के लिए तो पहले आपको सुधरना पड़ेगा। मैं सुधर चूका हूँ, उसके बाद यहाँ पर जो आते हैं, उन सभी की खराब आदतें धीरे-धीरे कम होती जाती हैं। अत: आप सुधर जाओगे तब उस समय पर बेटे की या पतिदेव की सभी आदतें कम होती जाएँगी।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, मेरे हसबैन्ड से ब्रांडी छूटती ही नहीं, तो फिर इसमें मुझे क्या करना है?

**दादाश्री :** ब्रांडी न पीए, ऐसा आप प्रेम दो न, तो ब्रांडी भी बंद कर देंगे। वह तो घर में प्रेम नहीं मिलता इसलिए फिर बाहर जाकर पी आते हैं, भाई। आपके घर में प्रेम देखेंगे तो वे सब छोड़ देंगे। प्रेम की खातिर हर एक चीज़ छोड़ देने के लिए तैयार हैं। यह प्रेम नहीं देखते इसलिए ब्रांडी से प्रेम कर लेते हैं, फलाने से प्रेम कर लेते हैं। या फिर बीच पर घूमते रहते हैं। 'अरे भाई, वहाँ पर तेरे पिताजी का क्या रखा है? घर पर रह न!' तब कहते हैं, 'घर पर तो मुझे अच्छा ही नहीं लगता'। यानी कुछ सोचना पड़ेगा, ऐसा कब तक चलता रहेगा आपका? घर में प्रेम बढ़ाओ। बच्चे भी खुश हो जाएँगे और बाहर जो दौड़-भाग करते हैं न, वह नहीं करेंगे, वे घर पर आ जाएँगे।

## व्यसन हो वहाँ पर डाँटना नहीं, समझ देना

**प्रश्नकर्ता :** दादा, हमारे बच्चे मीट खाते हैं, दारू पीते हैं, ऐसा सब करते हैं, इसका क्या असर होता है और इसे कैसे बंद करें?

**दादाश्री :** समझ देंगे तो हो सकता है, मार मारते रहने से नहीं

होगा। आपको उनसे इतना ही कहना है, कि भाई, ये हमें शोभा नहीं देता। हम खानदानी परिवार के हैं, ऐसा शोभा नहीं देता। इससे तबीयत बिगड़ती है, ऐसी सब बातचीत करनी है। न कि डाँटना या मारना। डाँटना-मारना नहीं है। यानी समझाना है, कि भाई, हमें शोभा नहीं देता। ऐसा है, वैसा है। इसके बावजूद भी न मानें तो फिर से समझाना। इसके बावजूद भी न मानें तो फिर से समझाना। उनके कर्मों का उदय शांत होगा तो यह अपना दिया हुआ ज्ञान उसे हाज़िर होगा। कर्मों का उदय शांत होगा तब। यानी आप रोज़ समझओ न, तो वह मन में तय करता है, कि उनकी बात सही है। मेरे पिताजी कहते हैं, लेकिन मुझसे ऐसा हो जाता है, मुझे नहीं करना है फिर भी। वह तय करते-करते, कि सही है, सही है, ऐसा करते-करते सही हो जाता है।

लेकिन आप बहुत कहते हो और डाँटते हो न, तब उसका भी तो अहंकार है न बेचारे का, कि 'क्यों डाँटते रहते हो? मेरी इच्छा नहीं है और डाँटते रहते हो?' इसलिए उल्टा करता है। ये तो बच्चे भीतर तय करते हैं, 'अभी डाँट लो अपने अनुसार, हम तो करेंगे।' उन्हें जो गलत लगता था मन में कि यह खराब है, खराब है, उनको खुद को जो ज्ञान था न, वह भी बदल जाता है और 'करूँगा ही' ऐसा वे निश्चय करते हैं, दृढ़ निश्चय करते हैं। 'चलो, जो होना होगा वह देख लेंगे, करना हो वह कर लेना', कहेंगे और फिर इससे भी अधिक मारने जाओगे न, तब तो बड़ा होकर मारे बगैर नहीं छोड़ूँगा, कहेंगे। यह इस तरह काम करता है!

## रोग या व्यसन, दोनों ही कर्म के उदय से

अपने लोग डाँटते रहते हैं पूरा दिन, किच-किच करते हैं, मारते हैं। जबकि बीमार हो जाता है तो नहीं डाँटते। क्या कारण है? ऐसा कुछ हो जाए उसे, तो कोई डाँटता है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, तो नहीं डाँटते।

**दादाश्री :** ऐसा क्यों? वह भी कर्म के उदय से है और यह

भी कर्म के उदय से है। उसके भी अंतरायकर्म होंगे तब न! जैसे यह बीस साल में टाइफाइड होता है, वह भी एक रोग है, कर्म के उदय से है। जबकि यह बीड़ी, होटल में खाते-पीते हैं वह भी कर्म के उदय से है, एक प्रकार का रोग है। कर्म के उदय से ही है यह सब। संयोग मिल जाते हैं तो वह गलत रास्ते पर चढ़ जाता है। अपने लोग कहते भी हैं, 'अरे, कुसंगी बन गया है।' अरे भाई, संयोगों के आधार पर है यह, उसका क्या दोष है? ऐसा है।

यह तो कुदरती तौर पर सुधरना होता है इसलिए सुधरते हैं। बाकी एक भी बाप नहीं सुधारता। बाप ही नहीं सुधरा था न!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन इस तरह से तो कोई पूर्ण नहीं है न?

**दादाश्री :** पूर्ण का क्या करना है तुझे? पूर्ण का हमें काम ही नहीं। यह व्यवहार चला ले इतना तो चाहिए, भला। जिस व्यवहार में पड़े हैं, वह व्यवहार तो अच्छी तरह चलाना पड़ेगा न! आपसे बेचारे बच्चे का बिगड़े नहीं, इतना तो करना चाहिए न? आपके घर में जितने हैं उतने, दूसरों का, किसी पड़ौसी का नहीं। आपकी शक्ति हो तो पड़ौसी का कर देना, वर्ना अपनों को तो सीधा करो। व्यवहार सुंदर होना चाहिए।

# [ 8 ] अक्रम विज्ञान की देन, व्यसनी को मोड़ा मोक्षमार्ग में

## 'व्यसनी क्यों?' ऐसा हम नहीं कहते

**प्रश्नकर्ता :** बीड़ी का व्यसन हो, चाय का व्यसन हो तो उसे मोक्ष मिलता है?

**दादाश्री :** मोक्ष, किसी को भी हर्ज़ नहीं है। मोक्ष बंधनकारक नहीं है। जो सरल होता है, उसका मोक्ष है। जो कोई जीव सरल होता है। मोक्ष खुद ही सरल स्वभाव का है। जो कोई भी सरल होगा,

उसका मोक्ष होगा। ये बीड़ी और चाय, यह तो उसे खुद को ही समझ में आएगा, कि यह तो उल्टा बंधे रहना पड़ता है मुझे। ये बलाएँ लग गई हैं इसलिए अपने आप ही बला से अलग हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आपके पास तो शराबी आए, उन्हें भी आपने ऐसा नहीं कहा, कि तू दारू क्यों पीता है और तुझे नहीं पीना चाहिए!

**दादाश्री :** ऐसा नहीं कहना चाहिए उसे। हमने क्या कहा है? कि तू व्यसनी हो गया है, उसका मुझे हर्ज़ नहीं है लेकिन जो व्यसन हो गया है, उसका भगवान के पास प्रतिक्रमण करना। लोग आपत्ति जताते हैं, कि तू दारू क्यों पीता है? अरे भाई, ज़्यादा बिगाड़ते हो उसे। उसका अहित कर रहे हो!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, अब जो इसमें ही सुख मानते हैं, उनका क्या?

**दादाश्री :** मानते हों, वे मानें लेकिन खुद को अंदर तो होता है, भला। वह तो मुँह से कुछ नहीं बोलते। मन में तो बहुत ही ऊब जाते हैं। संस्कार पिछले जन्म के हैं, आज के संस्कार ऐसे नहीं हैं। आज तो भला पश्चाताप होता है, कि ऐसा न हो तो अच्छा। पश्चाताप नहीं होता? कैसा पश्चाताप होता है? ऐसा न हो तो अच्छा लेकिन फिर भी हो ही जाता है, पिछले जन्म के संस्कार हैं न!

## जिनको कोई न रखें, उन्हें दादा रखें

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, यानी संतो की या दादा भगवान की कृपा हो, लेकिन कृपा के पात्र होने के लिए और उसे आचरण में लाने के लिए तो प्रयत्न करना चाहिए न व्यक्ति को?

**दादाश्री :** ऐसा है न, कि हमने अक्रम मार्ग इसलिए निकाला है, अक्रम!

**प्रश्नकर्ता :** अक्रम यानी क्रम ही नहीं हैं उसका।

**दादाश्री :** क्रम ही नहीं है, क्योंकि ये लोग क्रम में, दिवालियेपन में, दिवाला निकले ऐसी स्थिति में आ गए हैं। उनका जो क्रम है, उस क्रम में यदि सुधार करने जाएँगे तो दिवाला निकले ऐसी स्थिति में हैं। तो कब इनमें सुधार होगा?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत देर लगती है और लोग दुःखी होते हैं।

**दादाश्री :** और एक गुण नहीं सुधरता। साधुओं का भी नहीं सुधरता न, भला! इसलिए हमने साइन्टिफिक्ली खोज़बीन की, कि यह रास्ता गलत है अभी इसलिए यह अलग रास्ता मुझे पकड़ना पड़ा, अक्रम विज्ञान सारा। सारा सिद्धांतिक विज्ञान है। तुरंत ही फल देने वाला! आचरण-वाचरण नहीं बदलता। आचरण तो भीतर होगा उतना खत्म हो जाएगा तब बदल जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** क्रमिक मार्ग में त्याग करने की बात करते हैं।

**दादाश्री :** त्याग करो, त्याग करो। सभी व्यसनों का त्याग करो। व्यसन का त्याग पहले से करवाते हैं, उसके बाद ही तो भीतर आने देते हैं। तब इनका क्या करना है, इन बेचारे लोगों का? इन लोगों के लिए अस्पताल नहीं चाहिए क्या? इसलिए अपने अस्पताल में सभी को रखते हैं। जिसे कोई नहीं रखता उसे अपने वहाँ रखते हैं और मैंने अगले दिन कहा होता, कि व्यसन तुरंत छोड़कर आ जाओ यहाँ पर, तो मैं ज्ञान दूँगा। तो वह चला जाता।

## खुद का संसार रोग गया, इसलिए दूसरों का भी निकाल देते हैं

**प्रश्नकर्ता :** दादा, वह दर्दी तो है ही न?

**दादाश्री :** सभी दर्दी ही हैं न! इसीलिए दारू पीना पड़ता है। दारू क्यों पीना पड़ता है? सिगरेट क्यों पीनी पड़ती है? दर्दी हैं। चाय क्यों पीनी पड़ती है? तब कहते हैं, दर्दी हैं। बीड़ी-दारू, वे सब रोग ही हैं। यह रोग है, इसलिए उसकी दवाई करो।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, आपने तो ऐसा अस्पताल खोला है, कि किसी से पूछते नहीं हैं कि तू यह दर्द कहाँ से लाया और तेरा दर्द क्या है? दर्द ही निकाल देते हो।

**दादाश्री :** दर्द कहाँ से लाए, ऐसा कहना वह गुनाह है। दर्द तो, यह संसार रोग है, इसमें रोग की तरह-तरह की डिज़ाइनें होती हैं, इतना ही है लेकिन नाम एक ही 'संसार रोग'! डिज़ाइन अलग-अलग होती है। तरह-तरह की डिज़ाइन होती है, लेकिन रोग एक ही प्रकार का, 'संसार रोग'! तो हमारा संसार रोग चला गया इसलिए आपका निकाल देते हैं! आपका निकल गया न, ठीक है अब?

**प्रश्नकर्ता :** दादा, ये औषध जो जन्मोंजन्म के रोग के लिए आपने दिए इसलिए अब जाते हैं न!

**दादाश्री :** हाँ, हाँ। देखो न, और रोग भी चले जाते हैं न! यह भी आश्चर्य ही है न! संसार रोग के लिए कोई दवाई नहीं है, ज्ञानी पुरुष के अलावा। जो संसार रोग से मुक्त हुए हैं, इसके (उनके पास जाने के) अलावा दूसरी कोई दवाई नहीं है। आपको कैसे दादा मिल गए हैं, रोग निकाल दिया एकदम!

जबकि हमारा यह विज्ञान ऐसा है, सब दोष छूट जाएँ ऐसा है। अपना यह विज्ञान क्या काम करता है? संसार रोग का नाश करता है। जितना नाश होता है उनकी रक्षा करता है। यह जितना रोग नाश हुआ न, उतनी तंदुरस्ती उत्पन्न हुई, उस तंदुरस्ती की रक्षा करता है और नया रोग नहीं होने देता, ऐसा अपना विज्ञान है। तमाम प्रकार के रोग भी जाते हैं, देह के रोग भी जाते हैं, संसार-रोग भी जाता है, मोक्ष का भी होता है, सब होता है।

**- जय सच्चिदानंद**

## दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें

1. आत्मसाक्षात्कार
2. ज्ञानी पुरुष की पहचान
3. सर्व दु:खों से मुक्ति
4. कर्म का सिद्धांत
5. आत्मबोध
6. मैं कौन हूँ ?
7. पाप-पुण्य
8. भुगते उसी की भूल
9. एडजस्ट एवरीव्हेयर
10. टकराव टालिए
11. हुआ सो न्याय
12. चिंता
13. क्रोध
14. प्रतिक्रमण ( सं, ग्रं )
16. दादा भगवान कौन ?
17. पैसों का व्यवहार ( सं, ग्रं )
19. अंत:करण का स्वरूप
20. जगत कर्ता कौन ?
21. त्रिमंत्र
22. भावना से सुधरे जन्मोंजन्म
23. चमत्कार
24. प्रेम
25. समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य ( सं, पू, उ )
28. दान
29. मानव धर्म
30. सेवा-परोपकार
31. मृत्यु समय, पहले और पश्चात्
32. निजदोष दर्शन से... निर्दोष
33. पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार ( सं )
34. क्लेश रहित जीवन
35. गुरु-शिष्य
36. अहिंसा
37. सत्य-असत्य के रहस्य
38. वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी
39. माता-पिता और बच्चों का व्यवहार( सं )
40. वाणी, व्यवहार में... ( सं )
41. कर्म का विज्ञान
42. सहजता
43. आप्तवाणी - 1
44. आप्तवाणी - 2
45. आप्तवाणी - 3
46. आप्तवाणी - 4
47. आप्तवाणी - 5
48. आप्तवाणी - 6
49. आप्तवाणी - 7
50. आप्तवाणी - 8
51. आप्तवाणी - 9
52. आप्तवाणी - 12 ( पू, उ )
54. आप्तवाणी - 13 ( पू, उ )
56. आप्तवाणी - 14 ( भाग-1 से 3 )
59. ज्ञानी पुरुष ( भाग-1 )
60. व्यसन मुक्ति का मार्ग

**( सं - संक्षिप्त, ग्रं - ग्रंथ, पू - पूर्वार्ध, उ - उत्तरार्ध )**

- ★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा गुजराती भाषा में भी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई है। वेबसाइट **www.dadabhagwan.org** पर से भी आप ये सभी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।
- ★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा हर महीने हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा में ''दादावाणी'' मैगेज़ीन प्रकाशित होता है।

## संपर्क सूत्र

### दादा भगवान परिवार


**अडालज :** **त्रिमंदिर**, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे,
(मुख्य केन्द्र) पोस्ट : अडालज, जि.-गांधीनगर, गुजरात - 382421
**फोन :** +91 79 3500 2100, +91 9328661166/77
E-mail : info@dadabhagwan.org

**मुंबई :** **त्रिमंदिर,** ऋषिवन, काजुपाडा, बोरिवली (E)
**फोन :** 9323528901

**पुणे :** **त्रिमंदिर,** पुणे-बेंगलुरू हाईवे, खेड़ शिवापुर के पास,
वर्वे बुद्रूक, जिला-पुणे, महाराष्ट्र **फोन :** 7203098409

| | | | |
|---|---|---|---|
| **दिल्ली** | : 9810098564 | **बेंगलुरू** | : 9590979099 |
| **कोलकता** | : 9830093230 | **हैदराबाद** | : 9885058771 |
| **चेन्नई** | : 7200740000 | **पुणे** | : 7218473468 |
| **जयपुर** | : 8890357990 | **जलंधर** | : 9814063043 |
| **भोपाल** | : 6354602399 | **चंडीगढ़** | : 9780732237 |
| **इन्दौर** | : 6354602400 | **कानपुर** | : 9452525981 |
| **रायपुर** | : 9329644433 | **सांगली** | : 9423870798 |
| **पटना** | : 7352723132 | **भुवनेश्वर** | : 8763073111 |
| **अमरावती** | : 9422915064 | **वाराणसी** | : 9795228541 |

**U.S.A. :** **DBVI Tel. :** +1 877-505-DADA (3232),
**Email :** info@us.dadabhagwan.org

**U.K. :** +44 330-111-DADA (3232)

**Kenya :** +254 795-92-DADA (3232)

**UAE :** +971 557316937

**Dubai :** +971 501364530

**Australia :** +61 402179706

**New Zealand :** +64 21 0376434

**Singapore :** +65 91457800

**www.dadabhagwan.org**

## छूटें व्यसन इस तरह से

व्यसन से मुक्त होने के लिए यह 'गलत' है ऐसा ख्याल निरंतर रहना चाहिए। कोई बीड़ीयाँ पीता हो, पसंद न हो, छूटती न हो, तो भगवान से शक्ति माँग-माँग करनी है, कि 'न पीऊँ, न पीलाऊँ और पीने प्रति अनुमोदना न करूँ, ऐसी मुझे शक्ति दीजिए'। तो इससे करार टूटते जाते हैं। कोई व्यक्ति ऐसा कहे कि, 'ऐसा गलत क्यों कर रहे हो?' उस समय आपको उपराणां (रक्षण करना) नहीं लेना है। उपराणां न ले, तो एन्ड आएगा।

व्यसन भले ही न छूटे लेकिन यह हंड्रेड परसेन्ट गलत ही चीज़ है। यह निश्चय नहीं टूटना चाहिए। आपका निश्चयबल चाहिए, हम वचनबल देने के लिए तैयार है। सभी छूट जाता है अपने आप, हमारे शब्द से ही!

– दादाश्री

Printed in India

Price ₹25